thearyasamaj.org

वेदों की ओर लौटो...!

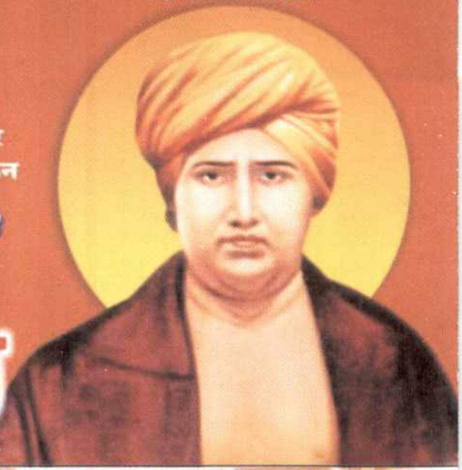

॥ ओ३म् ॥

॥ कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ॥

वेद प्रतिपादित मानवीय मूल्यों को
जन-जन तक पहुँचाने हेतु कार्यतत्पर
सशक्त एवं समर्थ प्रान्तीय आर्य संगठन

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का
मासिक मुखपत्र

वैदिक गर्जना

वर्ष १४ अंक १२ १० दिसम्बर २०१४

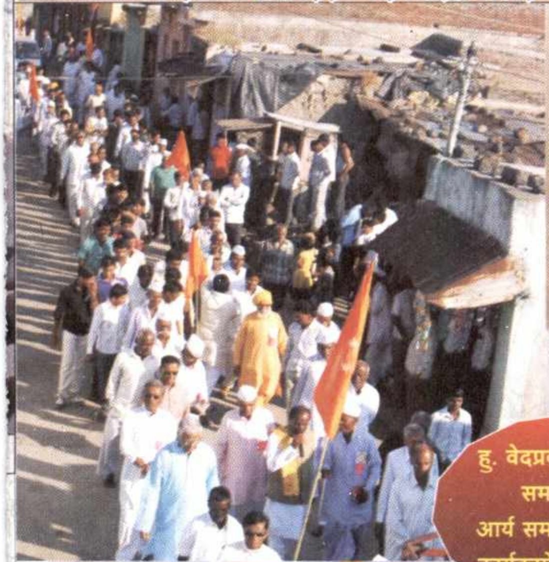

हु. वेदप्रकाश बलिदान
समारोह एवं
आर्य समाज गुंजोटी के
कार्यक्रमों की झलकियां

thearyasamaj.org

आर्य समाज गुंजोटी का जीर्णोद्धार समारोह

हैदराबाद संग्राम कालीन प्रसिद्ध क्रान्तिकारी आर्य समाज, गुंजोटी (ता.उमरगा जि.धाराशिव-उ.बाद) के जीर्णोद्धारित नये भवन का परिदृश्य ।

नये सभागार में आयोजित हु. वेदप्रकाश बलिदान समारोह में मार्गदर्शन करते हुए स्वामी व्रतानंदजी सरस्वती, मंचपर हैं प्रो.डॉ. धर्मवीरजी व अन्य विद्वान, संन्यासी आदि ।

हु. वेदप्रकाश स्मृति चौराहे पर आर्यों को सम्बोधित करते हुए प्रा. राजेन्द्रजी 'जिज्ञासु' । साथ मे श्री प्रकाशजी आर्य, श्री बसैये आदि ।

thearyasamaj.org

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का

मासिक मुखपत्र

वैदिक गर्जना

सृष्टि सम्वत् १,९६,०८,५३,११५ | कलि संवत् ५११५ | विक्रम संवत् २०७१

दयानन्दाब्द १९० | मार्गशीर्ष | १० दिसम्बर २०१४

प्रधान सम्पादक
माधवराव देशपांडे
(मो.० ९८२२२९५५४५)

सम्पादक
प्रा.डॉ.नयनकुमार आचार्य
(मो.० ९४२०३३०१७८)

सहसम्पादक - डॉ. ब्रह्ममुनि वानप्रस्थ (मो.०९४२१९५११९०४), प्रो.देवदत्त तुंगार (मो. ०९३७२५४१७७७)
प्रा. सत्यकाम पाठक, ज्ञानकुमार आर्य

अनुक्रम

हिन्दी विभाग

१) सम्पादकीयम्..४
२) श्रुतिसन्देश/ शिविर सूचना..५
३) आखिर दुनियां क्यों बिगडते जा रही हैं ?..६
४) गूंज उठा आर्यों का बलिदानी इतिहास..१८

मराठी विभाग

१) उपनिषद संदेश/ दयानंदांची अमृतवाणी..२३
२) सुभाषित रसास्वादः/ गाथा वाचू दयानंदांची..२४
३) गणितविश्वाचे बुद्धिसागर-भास्कराचार्य..२६
४) शौर्यस्थळी आर्यजनांची मांदियाळी..२८
५) असा हा अजमेरचा प्रेरक ऋषिमेळा..३१
६) शोकवार्ता..३३

● प्रकाशक ●
मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,
सम्पर्क कार्यालय-आर्य समाज
परली-वैजनाथ ४३१५१५

● मुद्रक ●
वैदिक प्रिन्टर्स
महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा
आर्य समाज,परली-वै.

-वैदिक गर्जना के शुल्क-
वार्षिक - रु. ५०/-
आजीवन रु. ५००/-

इस मासिक पत्रिका में प्रकाशित लेखों तथा विचारों से सम्पादक मण्डल सहमत हो, यह अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र परली-वैजनाथ जि.बीड ही होगा

thearyasamaj.org

सम्पादकीयम्

ढहते पाखण्ड के गढ

कितनी विचित्र सी बात है कि आज सारी दुनियां बडी मात्रा में धार्मिक पाखण्ड व अविद्या के प्रवाह में बहती जा रही है । चाहे अनपढ हो या पढे-लिखे, सभी लोग तथाकथित सन्तों, बाबाओं, महाराजों व स्वामियों के चक्कर में फंसकर अपना जीवन बरबाद कर रहे हैं । साथ ही आर्थिक व नैतिक अधःपतन भी ! सारे देश में पाखण्डी सन्तों ने एक तरह से उन्माद मचा रखा है । ईश्वर, धर्म व अध्यात्म के नाम पर भक्तों की असीम श्रद्धा का लाभ उठाकर उन्हें ठगने का धन्दा तेजी से बढ रहा है । लेकिन ऋषि के मन्तव्यानुसार ईश्वर की इस सृष्टिव्यवस्था में असत्य, अज्ञान, अविद्या व अन्याय का राज्य जादा दिनों तक नही टिकता । **सत्यमेव जयते नानृतम्** । अनेकों साधुओं व सन्तों की पोल अब खुलने लगी है । करोडों देशवासियों ने टी.वी.चैनलों पर आसाराम बापू-पिता पुत्रों की लीलाएं देखी हैं। और अब हाल की में हिसार (हरियाणा) के रामपाल नामक (अ) सन्त के आलिशान महल व उसमें चलनेवाले काले धन्दों का बाजार देखा । अब ये बाबा लोग जेल की हवा खा रहे है । यह तो मिसाल ही है । इनसे पूर्व भी इस देश में चन्द्रास्वामी, ओशो रजनीश, सत्यसाई बाबा, नित्यानन्द आदियों के बारे में सारी दुनियां भली भांति समझ चुकी है । बावजूद इसके आज भी देश में डेरा सच्चा सौदावाले राम-रहीम सम्प्रदायवाले सम्पन्न साधु लोग अपने आश्रमों की साम्पत्तिक स्थिति को मजबूत बनाये रखे हैं । महाराष्ट्र में स्वयं को श्री दत्त का अवतार माननेवाले श्री नरेन्द्र महाराज (नानीज) की बहुत चलती है । अपने भक्तों की इच्छापूर्ति का आश्वासन देकर उनकी श्रद्धाभावना के साथ इस तरह बडे पैमाने पर खिलवाड हो रहा है । ऐसे एक नहीं अनेकों तथाकथित साधु सन्त देश के अलग-अलग राज्यों में स्थान-स्थान पर लाखों श्रद्धालुओं के आस्था का केन्द्र बन चुके हैं । बडी विडम्बना की बात है कि मोदी सरकार में मानवसंसाधन जैसा मंत्रालय संभालनेवाली मंत्री श्रीमती स्मृति इरानी भी एक अशिक्षित ज्योतिषी बाबा को अपना हाथ दिखाकर भविष्य जानना चाहती है । आखिर ऐसा क्यों हो रहा है । इस विषयपर आदरणीय डॉ. प्रो.धर्मवीरजी परोपकारी में विस्तार से लिख चुके है ।

जब तक दुनियां के लोग विशुद्ध वैदिक विचारधारा को अपना कर अपना विवेक जागृत नहीं करेंगें, तब तक देश में ऐसे ढोंगी साधु-सन्तो का बोलबाला होता ही रहेगा । हमने आधुनिक विज्ञान व तंत्रज्ञान द्वारा भौतिक प्रगति के पूल तो बांध लिये, किन्तु धार्मिक अज्ञान व अविद्या को तर्क के तराजू पर तोला ही नहीं तथा वेदज्ञान का विवेकपूर्ण दृष्टिकोन अपनाया नहीं । इसी कारण ऐसा हो रहा है । जब तक सत्य को स्वीकारेंगें नहीं, तब तक इन बाबा महाराजों का साम्राज्य बढता ही रहेगा ।

thearyasamaj.org

यज्ञीय विद्वानों का आचरण

यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् ।

ते ह नाक महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः ।। (यजु. ३१/१६)

अन्वयार्थ – हे मनुष्यों ! जो **(देवाः)** विद्वान् लोग **(यज्ञेन)** पूर्वोक्त ज्ञान यज्ञ से **(यज्ञम्)** पूजनीय सर्वरक्षक अग्निवत् तेजस्वि ईश्वर की **(अयजन्त)** पूजा करते हैं **(तानि)** वे ईश्वर की पूजा आदि **(धर्माणि)** धारणारूप धर्म **(प्रथमानि)** अनादि रूप से मुख्य **(आसन्)** हैं **(ते)** वे विद्वान **(महिमानः)** महत्व से युक्त हुए **(यत्र)** जिस सुख में **(पूर्वे)** इस समय से पूर्व हुए **(साध्याः)** साधनों को किये हुए **(देवाः)** प्रकाशमान विद्वान् **(सन्ति)** हैं, उस **(नाकम्)** सब दुःखरहित मुक्ति–सुख को **(ह)** ही **(सचन्त)** प्राप्त होते हैं, उसको तुम लोग भी प्राप्त होओ ।।

भावार्थ – मनुष्य को चाहिए कि योगाभ्यास आदि से सदा ईश्वर की उपासना करें , इस अनादिकाल से प्रवृत्त धर्म से मुक्तिसुख को पाके पहले मुक्त हुए विद्वानों के समान आनन्द भोगें । **(महर्षि दयानन्द कृत यजुर्वेदभाष्य से साभार)**

धर्मार्थकाममोक्षाणामारोग्यं मूलमुत्तमम् ।

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा

लन्दन के समाजसेवी – स्व.धर्मपालजी भसीन एवं

स्व.श्रीमती शान्तिदेवी मायर की पावन स्मृति में

* स्वास्थ्यरक्षा एवं चिकित्सा शिबिर अभियान *

** १ से ३ फरवरी २०१५.......... आर्य समाज, वाशी जि. धाराशिव*

** ४ से ८ फरवरी २०१५.......... आर्य समाज, किल्लेधारूर, जि. बीड*

** ९ से १३ फरवरी २०१५....... आर्य समाज, रेणापुर, जि.लातूर*

** १४ से १८ फरवरी २०१५.... आर्य समाज देगलूर, जि. नांदेड*

** १९ से २३ फरवरी २०१५.... आर्य समाज, धर्माबाद , जि. नांदेड*

** २४ से २६ फरवरी २०१५..... आर्य समाज मुदखेड , जि. नांदेड*

मार्गदर्शक – पू. विज्ञानमुनिजी, डॉ. ब्रह्ममुनिजी, पं. सुधाकरजी शास्त्री, पू. ब्रह्मनादमुनिजी व पं. प्रतापसिंहजी चौहान

सभी स्वास्थ्यप्रेमी सज्जनों व देवियों से निवेदन है कि वे इन शिबिरों में सहभाग लेकर स्वास्थ्य लाभ उठावें । तथा इन शिविरों को सभी मिलकर सफल बनावें

विनीत–महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य समाज, परली–वै.

thearyasamaj.org

महापुरूषों के सत्प्रयासों के बावजूद भी

आखिर दुनियां क्यों बिगडते जा रही है ?

–डॉ. ब्रह्ममुनि वानप्रस्थ

आज सारे संसार में इतनी ढेर सारी समस्याएं बढ गई हैं कि इनसे मनुष्य परेशान हो चुका है । व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय, वैश्विक आदि समस्याओं ने सभी को त्रस्त कर रखा है । महिला, पुरूष, बच्चे-बच्चियां, वृद्ध, गृहस्थाश्रमी आदि सभी की विभिन्न जटिल समस्याएं दिन ब दिन बढती ही जा रही है । इनके साथ ही आर्थिक एवं पर्यावरण की भी समस्या हम सबके लिए परेशानी का कारण बन रही हैं । भ्रष्टाचार, धोकाधडी, अन्याय, आत्महत्याएं, आतंकवाद, ईर्ष्या, द्वेष, छल-कपट, आपसी झगडे, लूट-पाट, खून, बलात्कार, कोर्ट कचहरी, तलाक, पागलपन, उदासीनता, निराशा, अकेलापन आदि समस्याओं के कारण मनुष्य का जीना दुष्कर हो चुका है । साथ ही अनेक प्रकार की बिमारियां जैसे कैन्सर, बी.पी., मधुमेह, ह्रदयविकार, वातव्याधी, तणाव आदि के कारण सभी लोग परेशान नजर आ रहे हैं । अशुद्ध वायू, प्रदूषित जल, भूमि, अन्न इत्यादियों से सारे विश्व का प्राणिसमूह दुःखी है । चहुं तरफ पदार्थों में मिलावट हो रही है । तेल, दूध, अन्न, औषधि आदियों में पडे पैमाने पर मिलावट होने के कारण मनुष्य उत्तम स्वास्थ्य से वंचित होता जा रहा है । महंगाई की आर्थिक समस्या भी मनुष्य के लिए कष्टप्रद सिद्ध हो रही है ।

आज का इन्सान आलसी बनते जा रहा है । काम न करते हुए पैसों की इच्छा बढती जा रही है । एक ओर सरकार द्वारा नाना प्रकार की योजनाएं लागू होने से लोगों को मुफ्त में ही धन व अन्न मिल रहा है, तो दूसरी ओर शहरों में कम रांच्याक काम में जादा पैसे मिल रहे हैं । इस कारण काम करने के लिए मजदूर ही मिल नही रहे हैं । व्यापारी, व्यवसायी, उद्योजक, शासकीय, अधिकारी आदि लोग अच्छे मजदूर व प्रामाणिक कर्मचारियों के अभाव में परेशान नजर आ रहे हैं । परिश्रम करने के लिए कोई तत्पर नहीं है । इसी कारण किसानों को कृषिकार्य करना कठिन हो चुका हैं । क्योंकि मजदूरों का बडे पैमाने पर अभाव ! कृषकवर्ग गाय, बैल, भैंस आदि पशुओं को संभाल नहीं पा रहा है । अतः पशुधन भी कम हो रहा है । दूध, दही, छांच, घी आदियों का मिलना दुर्लभ

thearyasamaj.org

हो चुका है ।

आज समाज में सर्वत्र प्रेम, सद्भावना, आदर, नम्रता, परोपकार, त्याग, तपस्या, समर्पण, प्रामाणिकता, उदारता, नैतिकता, सत्याचरण, न्यायाचरण, परहित की भावना, निःस्वार्थवृत्ति, पक्षपातरहितभाव , संतोष, शांति, आनन्द आदि सभी बातें नहीं के बराबर नजर आ रही हैं । कुल मिलाकर मानव जीवन उध्वस्त होते जा रहा है ।

इन सभी समस्याओं को सामने रखकर अनेकों लोगों ने इनका स्थायी समाधान ढूंढने का प्रयास किया, किन्तु इन्हें कोई स्थायी उत्तर नहीं मिला । इसके लिए आज भी लोग प्रयत्नरत है । दुर्भाग्य से वे भी निरूत्तरित हो गये हैं । मानव जीवन को बचाने व सुख-समृद्धि बढाने के लिए महापुरूषों ने अपना पूरा जीवन लगाया । कितने ही बलिदानी हो गये । अनेकोंने फाँसी के तख्त को चूमा । विषप्राशन तक किया, किन्तु उन सभी के प्रयास भी सफल नही हुए । सुधार के बजाय बिगाड ही बिगाड होता गया और समस्याएं ज्यों की त्यों रह गयी ।

पाश्चात्य जगत् के प्रख्यात विद्वान व तत्वज्ञानी सॉक्रेटिस ने उस समय के प्रस्थापित लोगों की गलतियां बताकर उनमें सुधार लाने के लिए बहुत अच्छा उपदेश दिया था । वह उपदेश सभी के कल्याण का होते हुए भी प्रस्थापित व प्रतिष्ठित लोगों को वह प्रयास अच्छा नहीं लगा । वे लोग इस तत्वज्ञानी को अपना शत्रु ही मान बैठे । हालांकि साधारण व अच्छे प्रामाणिक लोगों को तो इस तत्वज्ञानी पंडित का प्रयास (उपदेश) अच्छा लगा, किन्तु वे क्या करते ? दुर्भाग्य से पाखण्डी व प्रस्थापित लोगों ने इसका कडा विरोध किया । इन लोगों को स्वयं की निजी गलत मान्यताएं ही अच्छी प्रतीत होती थी और अपनी स्वयं की झूठी प्रतिष्ठा को वे बचाना चाहते थे । साथ ही वे समाज पर अपना वर्चस्व बनाये रखना चाहते थे । इसलिए उन्होंने तत्कालिन राजाओं को आग्रह किया कि सॉक्रेटिस के विचारों का वे विरोध करें व उसे दंडित करें । यहां तक कि राजाओं ने भी पोपों व पाखण्डियों के कहने पर सॉक्रेटिस को विष दिया और उसे मार डाला । क्या यह न्याय था ? बाद में वे प्रस्थापित पाखण्डी लोग ही अपनी गलतियों को सॉक्रेटिस का नाम देकर ही आगे बढाते रहे ।

महाभारत के समय भी उचित व योग्य सलाह देनेवाले महात्मा विदुरजी की अच्छी बातें राजा धृतराष्ट्र को पसंद नहीं

thearyasamaj.org

आयी, तभी विदुरजी स्वयं ही कौरव व पांडवों से अलग हो गये। यथासमय जो भी उपदेश हेतु उनके समीप आये, उनको वे समुचित सलाह देते रहे, किन्तु असत्य कभी नहीं कहा। वे एकान्त में साधनामय जीवन व्यतीत करते रहे।

आचार्य शंकर ने भी प्रस्थापित वैदिक लोगों को संभालने के लिए उनकी गलतियों को ही उचित ठहराने के लिए बौद्ध, जैन आदियों को पराजित करने के लिए अपना सारा जीवन लगाया और अहर्निश कार्य करते रहे। अल्पकाल में ही उन्होंने देश के चार स्थानों पर चार धर्मपीठों की स्थापना की। नैष्ठिक ब्रह्मचारी रहकर वे आजीवन वैदिक विचारों का प्रचार करते रहे, किन्तु उन्हें भी दुष्ट पाखण्डी लोगों ने विष देकर मार डाला और उनके साथ विश्वासघात किया।

महाभारत में राजा-महाराजाओं की भरी सभा में द्रौपदी का वस्त्रहरण हो रहा था, उस समय कुलगुरू कृपाचार्य, गुरू द्रोणाचार्य, पितामह भीष्म आदि विद्वान् चुपचाप बैठे रहे। अपनी आँखों के सामने एक नारी (महारानी) का इतना अपमान होता देखकर इसे रोखने की इनकी हिम्मत नहीं हुई। क्या यह न्याय था ? असत्य, अन्याय एवं अत्याचारियों का पक्ष लेना कितना उचित था ? महाभारत के युद्ध में भी असत्य व अधर्म का पक्ष लेकर ये सभी आचार्यवृंद कौरवों के पक्ष में होकर लडते रहे। क्या यह न्यायाचरण था ? क्या यह सचमुच धर्म था ? आगे चलकर ये भी लोग प्रस्थापित होते रहे।

ईसा मसीह जैसे धर्म सुधारक को भी प्रस्थापित धर्मगुरुओं ने अनेकों कष्ट देकर मृत्युदण्ड दिया। उपके हाथ व पैरों में किल मारकर उन्हें न जाने कितनी यातनायें दी ? ईसा ने तत्कालिन पाखण्डी गुरूओं की गलतियों के विरोध में आवाज उठाई तथा उन्हें सुधारने के लिए उपदेश देना चाहा, तब यह उपदेश प्रस्थापित लोगों को अच्छा नहीं लगा। इस तरह सत्य के पक्षधर महात्मा ईसा को इन्हीं लोगों ने मार डाला। क्या यह समुचित न्याय व सत्य धर्म था ? क्या यह सत्य की उपासना थी ? बाद में ईशु का ही नाम लेकर अपनी गलतियों को प्रतिष्ठित करते हुए ये ही लोग समाज में प्रस्थापित हुए।

महाराष्ट्र के महान सन्त श्री ज्ञानेश्वरजी ने अपना पूरा जीवन लगाकर मानवमात्र को सत्यज्ञान व कल्याण का रास्ता बताने का प्रयास किया। अपने भाई व बहन के साथ अनेकों कष्ट सहन किये। सामान्यजनों के लिए संस्कृत का ज्ञान प्राकृत भाषा में प्रसारित किया। श्रीमद्भगवद्गीता का भाष्य सरल

thearyasamaj.org

प्राकृत भाषा में शब्दबद्ध किया, तब प्रस्थापित संस्कृत के ठेकेदारों ने अपनी गलतियां छुपाने के लिए और समाज में अपनी महत्ता प्रतिष्ठापित करने के लिए पूरे प्रयास किये । सामान्य लोगों को जागृत करना उन्हें अच्छा नहीं लगा । इसलिए संत ज्ञानेश्वर व उनके भाई-बहनों को यातनायें देकर अपमानित किया । श्री संत ज्ञानेश्वरजी को भी प्रस्थापित लोगों ने ही जीवित समाधी के बहाने मृत्यु दिलवाई । क्या यह भी न्याय था ? क्या यह सत्याचरण था ?

एक साधारण परिवार में जन्में, महाराष्ट्र के दूसरे संत श्री तुकारामजी ! ये अल्पशिक्षित थे, अन्धविश्वास के विरोध में उन्होंने अपने अभंगों के माध्यम से आवाज उठाई । वे सत्य के प्रबल समर्थक थे । समाज में सुधार कर वे सामान्यजनों को कल्याण का रास्ता दर्शाना चाहते थे । उस समय भी बडे पैमाने प्रस्थापित लोग अपनी प्रतिष्ठा को बढाने के लिए धर्म के नाम अधर्म, सत्य के नाम पर असत्य तथा ईश्वर के नाम पर गलत रूढियां चला रहे थे । वेद के नाम पर अज्ञान व अविद्या का प्रसार कर रहे थे, तब संत तुकाराम ने मराठी में रचे अभंगों के माध्यम से असत्य का खंडन व सत्य का मंडन करना शुरू किया । समाज में जागृति लाने का उन्होंने भरसक प्रयास किये, लेकिन इस जुझारू संत का विचार प्रस्थापित लोगों को अच्छा नहीं लगा । इन्होंने अपनी गलतियां सुधारने के बजाय इस संत का ही विरोध करना शुरू किया । तुकारामजी को अनेकों यातनाएं देना शुरू की । षड्यंत्र रचकर इन्हें मार डाला और उनकी लाश गायब कर दी । इन्हीं हत्यारों ने भोली भाली जनता को यह बताया कि **ईश्वर ने एक विमान भेजा था, जिसमें संत तुकाराम बैठकर सदेह वैकुंठवासी हो गये** । भोलीभाली अज्ञानी जनता आज भी इसी बात को सही मानकर चल रही है । आज ये ही प्रस्थापित लोग तुकाराम की अभंगगाथाओं का अभ्यास व व्याख्याएं स्वयं को बचाकर करते हैं । उनके अभंगों पर आधारित कीर्तनों के माध्यम से स्वयं को आगे ला रहे हैं । गाथा में अपनी ओर से मनगढन्त मिलावट कर रहे हैं । कितनें चालाक लोग हैं ये सारे ?

कार्ल मार्क्स जैसा सिद्धान्तवादी समाजसुधारक भी तथाकथित धार्मिक व ईश्वरभक्त कहलानेवाले प्रस्थापित लोगों के विरोध में खडा हो गया । पाखण्डियों के अनैतिक, अधार्मिक, अमानवीय, क्रूर व्यवहारों को देखकर उसने उनका विरोध किया । तब प्रस्थापित लोगों ने उन्हें भी नास्तिक कहकर अलग किया, तब कार्ल मार्क्स ने ईश्वर, धर्म , नीति आदि सभी

thearyasamaj.org

शब्दों को छोडकर केवल अर्थ को ही महत्व दिया और गरीबों के पक्ष में खडा हुआ ।

कर्नाटक के समाजसुधारक महात्मा बसवेश्वर, जो कि ब्राह्मण कुल में पैदा हुए थे । उन्होंने प्रस्थापित लोगों केगलतियों को लेकर और असत्य, अधर्म, अनैतिकता, संकीर्णता, अज्ञान, अंधविश्वास, जातिवाद के विरूद्ध आवाज उठाई । सामान्य लोगों को सत्यज्ञान देने हेतु उन्होंने बहुत प्रयास किये । जाति निर्मूलन, उंच - नीच भेदभाव निर्मूलन, मूर्तिपूजा विरोध आदि के माध्यम से समाज में सुधार लाने के भरसक प्रयास किये । अनेकों अन्तर्जातीय विवाह करवाये, किन्तु दुर्भाग्य यह रहा कि इस सुधारक को उनके अनुयायियों ने ही अनेकों कष्ट दिये और उन्हें भी मृत्युदंड दिया । उनके पश्चात् उन्हीं के नामपर प्रस्थापित लोग अपनी अज्ञानता, अन्धविश्वास, जातिवाद, जडपूजा आदि बातें बडे पैमाने फैला रहे हैं । कितनी विडम्बना की बात है यह ?

इस्लाम मत के संस्थापक मुहम्मद पैगंबर भी मूर्तिपूजा के विरोध में प्रतिक्रियावादी बनें व उन्होंने भी अपना अलग इस्लाम मत चलाया ।

समय-समय पर अज्ञान, अन्धःविश्वास व कुरीतियों का विरोध करनेवाले ऐसे कितने ही सुधारवादी लोगों ने प्रस्थापित लोगों पर प्रतिक्रियावादी बनकर अपने स्वतन्त्र मत व सम्प्रदाय चलाये । किन्तु ये नये सभी मत भी अधूरे ही रहें । विरोधियों की गलतियों को लेकर और अपनी ओर से कुछ नया जोडकर नये मतप्रवाहों का संचालन किया । हर एक मत ने अपने-अपने धर्मग्रंथ रचे और अपनी स्वतन्त्र धार्मिक मान्यताएं बनायी ।

मूलतः गलतियां करनेवाले सभी लोग वेद को माननेवाले थे । उन्होंने ही सबकी बुद्धियों को ताले लगा दिये । अपनी गलतियाँ बराबर हैं, अधर्म ही धर्म है आदि सारी बातें सिद्ध करने के लिए उन्होंने वेदशास्त्रों का आधार लेना आरम्भ किया । अपनी गलतियों को धार्मिक सिद्ध करने हेतु प्रक्षिप्त साहित्य का उपयोग करना शुरू किया । साथ ही उनके बनाये प्रक्षिप्त वेद व शास्त्रों के विरोध में बोलने या शंकायें उपस्थित करने के लिए सामान्यों पर पाबन्दी लगा दी । इतना ही नहीं, बल्कि 'आचार्य, पण्डित व धर्मगुरूओं के विरोध में कोई भी कुछ कहना नहीं,' ऐसा दण्डविधान बनाया गया । इससे अज्ञान, अन्धविश्वास, असत्य व अधर्म में बढोतरी ही हुई ।

इस दण्डविधान को बाद के मत व सम्प्रदायवालों ने अपनाया और वे भी प्रस्थापित हो गये । इनके विरोध में तथा धर्मग्रन्थों के विरोध में किसी ने कुछ बोला

thearyasamaj.org

या लिखा, तो उन्हें मृत्युदण्ड देकर समाज में आतंक खडा किया और अपना धन्दा चालू ही रखा ।

बौद्ध, जैन, पारसी, ईसाई, मुसलमान, नास्तिक, वामपन्थी आदि नये पन्थ बनते गये, तो भी मूलतः वेदों को माननेवाले प्रस्थापित होकर गलतियां बढाते ही रहे । आधुनिक वैज्ञानिकों ने भी सृष्टि का अध्ययन करते हुए सत्य की तलाश करने की कोशीश की, तो सृष्टि के सत्य तत्व भी धर्मग्रन्थों के विरोध में जाते रहे । इससे वे सभी धर्मगुरू व उनके सम्प्रदाय भी झूठ साबित होने लगे । बाईबल में पृथ्वी को समतल बताया गया, तब वैज्ञानिकों ने प्रयोग द्वारा यह सिद्ध किया कि पृथ्वी तो गोल है, तब प्रस्थापित लोगों व धर्मगुरूओं ने वैज्ञानिकों को भी मृत्युदण्ड दिया । इस तरह असत्य, अज्ञान व अन्धविश्वास का राज्य बढता गया । परिणामतः उन सभी वैज्ञानिकों ने धर्मग्रन्थ, धर्मगुरू व उनके धर्मों (पन्थों) को तथा उनकी ईश्वरवाद, नीतिन्याय आदि संकल्पनाओं को त्याग दिया और वे केवल भौतिकवादी बनें ।

उन्नीसवी शती के महान क्रान्तिकारी युगपुरूष महर्षि दयानन्द सरस्वती जो कि एक तपस्वी योगी, ब्रह्मचारी व ऋषि थे, उन्होंने वेद, उपनिषद्, दर्शन, सृष्टिनियम व उसके क्रम का सूक्ष्मता से अध्ययन किया । साथ ही इन सभी मत-मतान्तरों व उनके धर्मग्रन्थों का भी अध्ययन किया । वेद व सृष्टिनियमों की सत्य बातों को अच्छी तरह से जान लिया और मूलभूत गलतियों व उनपर प्रतिक्रियारूप निर्मित गलतियों व दोषों को दुनियां के सामने रखा तथा समग्र संसार को वैचारिक दृष्टि से एक सूत्र में बांधकर वैश्विक एकता व विश्वशान्ति के साथ ही व्यक्ति के आत्मकल्याण का शाश्वत मार्ग वेद व सृष्टिनियमों के आधारपर प्रशस्त किया। महर्षि हा यह पक्षपातरहित वेदपथ सबके कल्याण का था, किन्तु दुर्भाग्य से हिन्दू, मुसलमान, ख्रिश्चन, वाममार्गी, पारसी, नास्तिक तथा सभी प्रस्थापित लोगों को महर्षि का यह सर्वकल्याणकारी विचार जंचा नहीं । इन मतवादियों ने ऋषि के इन पावन वेदविचारों का जमकर विरोध किया । स्वामीजी को अनेकों कष्ट पहुंचाये । अन्त में विष देकर विश्वासघात से स्वामीजी का प्राणहरण किया । यदि दयानन्द न होते, तो इस देश का इस्लामीकरण व ईसाईकरण होने में देर न लगती ।

सम्प्रति भारत में रहनेवाले देशवासी जो कि वेद को केवल मानते हैं, वेद पर इनकी श्रद्धा तो है, किन्तु वेद के शाश्वत ज्ञान से ये बहुत दूर जा

thearyasamaj.org

रहे हैं । ये स्वयं को वैदिक, हिंदू, आर्य आदि कहते हैं । ये धर्म, अध्यात्म व ईश्वर के नाम पर पाखण्ड व आडम्बर रचाते हैं । इनका विरोध बौद्धों, जैनियों मुसलमानों, ईसाइयों, वामपन्थियों, कम्युनिष्टों, वैज्ञानिकों आदियों ने किया । फिर भी हमारी गलतियाँ बढते गयी । ऐसे में ही हमने राजाश्रय लिया, तब उपरोक्त मतवादियों ने भी राजाश्रय लिया और अपनी गलतियों को कायम बनाये रखने व स्वयं को प्रस्थापित करने का प्रयास किया ।

इस सभी (हिन्दुओं) को बचाने के प्रयत्न अनेकों क्षत्रिय राजाओं ने किये । महाराष्ट्र के वीरभूषण छत्रपति शिवाजी ने बचपन से ही मावलों (मित्रों) की फौज बनाकर मुगलों के विरूद्ध आवाज उठाई । हिन्दवी स्वराज्य स्थापन कर मुसलमानों के बढते अत्याचारों को रोकने में सभी शौर्य के साथ लढते रहें और हिन्दुओं के तथाकथित प्रस्थापितों को बचाते रहे । ऐसा कहा जाता है कि यदि शिवाजी न होते तो यहां पर सभी हिन्दुपुरूषों की सुन्नत होती । ऐसे वीरवर शिवाजी के राज्यारोहण का जब समय आया, तब इन्हें राज्याभिषेक करने के लिए आवश्यक यज्ञोपवीत प्रदान करने से धर्मगुरूओं ने रोका गया । क्योंकि वे ब्राह्मण नहीं थे । साथ ही वे उच्च्य क्षत्रिय भी नही माने जाते थे ।

मेवाड के वीर सपूत महाराणा प्रताप ने हिन्दुओं की रक्षा हेतु न जाने कितने कष्ट रहन किये । स्वाभिमान के धनी इस वीर को प्रतिकूल विपदाओं को झेलते हुए जंगलो से विचरना पडा, हिन्दुओं के हित में भूखे-प्यासे रहें । इनके परिवार को घास की रोटियां खानी पडी !

साथ ही पंजाब के महान वीर सपूतों को भी कितना बडा बलिदान देना पडा। गुरूगोविन्द सिंह, तेगबहादुर सिंह, अर्जुनदेव आदियों ने अपना सारा जीवन लगाया । गुरूगोविन्द जी के प्यारे पुत्रों को दीवारों में चिनवाया गया ।

हिन्दू वेद को ईश्वरीय वाणी मानकर चलता है, किन्तु अपने आचार-विचार वेदविरूद्ध रखता है । जातिवाद, जडपूजा, स्वर्ग-नरक, मृतक-श्राद्ध आदि अवैदिक मान्यताओं को आज भी हिन्दू बडे पैमाने पर सम्भाल रहा है । इन अनिष्ट बातों को दूर करने के लिए हिन्दू संगठनों को प्रयास करने चाहिए । हिन्दुओं के बुद्धिजीवियों का नेतृत्व करनेवाला **राष्ट्रीय स्वयसेवक संघ** यह संगठन हिन्दुओं तथा इनकी अवैदिक परम्पराओं को बचाने की कोशीश कर रहा है । अन्य हिन्दुत्ववादी कहलानेवाले वि.हि.प., बजरंग दल, हिन्दू महासभा आदि संगठन व उनके धर्मगुरू, जगद्गुरू आदि भी हिन्दुओं को बचाने की कोशीश

thearyasamaj.org

कर रहे हैं । किन्तु दुर्भाग्य से हिन्दू की संख्या और एकता भी दिन प्रतिदिन कम होते जा रही है ।

अब देश की जनता ने श्री नरेन्द्रभाई मोदी को देश का प्रधानमन्त्री बनाया है । उन्होंने अपनी प्रचारसभाओं में स्पष्ट रूपसे कहा था – **मैं सबका हूं, सबके लिए काम करूंगा ।** जनता ने उन्हें हिन्दुओं के नेता के रूप या हिन्दूराष्ट्र बनाने के उद्देश्य से चुनकर नही दिया है । फिर भी रा.स्व.संघ, वि. हि प., भाजप आदि के नेतागण देश में आये परिवर्तन को मोदी लहर न मानते हुए इसे हिन्दुत्व की ऐतिहासिक की विजय बता रहे हैं । देश में रहनेवाली सवा सौ करोड जनता, जिसमें सभी प्रकार के महजब (सम्प्रदाय) तथा विभिन्न मतों व सिद्धान्तों के माननेवाले लोग हैं, न कि सिर्फ हिन्दू ! केवल विकास व मानवता के आधार पर व मोदीजी के प्रेरक व्यक्तित्व पर मुग्ध होकर केन्द्र में नई सरकार बनीं व राज्यों में भी परिवर्तन आ रहा है । लेकिन इस वास्तविकता को झुठलाकर हिन्दुत्व की लहर व जीत बताना यह असल में भारी भूल है । ऐसा कहना व मानना सबसे बडी गलती होगी । अब मोदीजी को इन हिन्दुत्ववादियों से सावधान रहना होगा ! यदि मोदीजी इसी कारण अपने अछूत बन्धुओं का बडे पैमाने पर धर्मान्तरण होता रहा ।

वेदों को माननेवाले में से ही बौद्ध, जैन, पारसी, वाममार्गी, मुसलमान, ख्रिश्चन, सिख, नास्तिक, वीरशैव (लिंगायत) आदि मत सम्प्रदाय और इन्हीं में और भी जातिवर्ग स्थापित हुए और से सभी स्वयं को वेदविरूद्ध बताते है । जो कोई हिन्दू अपना मत त्यागकर दूसरे मत में प्रविष्ट हुए, वे वापिस आये ही नहीं । यदि कोई पुनश्च वापिस भी आ जाता, तो हिन्दू उसे पंचा नहीं पाता और न ही वह उसका स्वागत करता । हिन्दुओं को इसपर चिन्तन करना होगा कि इतनी मारपीट होने पर भी वह क्यों सुधर नहीं रहा हैं ? क्या कारण है इसका ? हिन्दुओं ने अपनी गलतियों में कभी सुधार ही नहीं किया । इसके विपरीत अपनी गलतियों को सही करार देते हुए हिन्दुओं ने सदैव दुर्हड ही करता रहा ।

अपने दोषों व गलतियों को उचित ठहराने हेतु इन्होंने वेद, उपनिषद, स्मृति आदि ग्रन्थों में मिलावट की । गलत तरिके से शास्त्रों के भाषान्तर किये । वेदों को पढने का अधिकार केवल ब्राह्मणों तक ही सीमित रखा और अन्य सामान्य लोगों को वेदज्ञान से वंचित किया । इन्हें अज्ञान, अविद्या अन्धविश्वास में डुबाये रखा और अपना, स्वार्थ सिद्ध रखा गया । यह सब से बडा घोर पापकृत्य हुआ है । इन पापों के अनिष्ट फल आज बहुजनों को भोगने पड रहे हैं और आगे भी भोगने

thearyasamaj.org

पडेंगे। क्योंकि कर्मों के फल भोगे बिना दूसरा कोई इलाज नहीं है। इनका बहुत कुछ भोगना अभी बाकी है। इसीलिए सभी की सद्बुद्धि का उदय हो नहीं पा रहा है।

महर्षि दयानन्द ने वेदों का जो पावन मार्ग बताया है, उसे यदि हिन्दू स्वीकार करेंगें, तो आज भी वह समग्र विश्व पर राज्य कर सकेंगें। सारे संसार का गुरूपद पुनश्च इस भारतवर्ष को मिल सकेगा। वेदप्रतिपादित व ऋषिमुनियों द्वारा प्रणित ज्ञान यह शाश्वत सत्य ज्ञान है, यह सार्वभौम व सबके लिए सर्वकल्याण का ज्ञानमार्ग है। यह ज्ञान-विज्ञान सृष्टिक्रमानुसार व सृष्टिविज्ञान के आधार पर परिपूर्ण है। इसी कारण ऋषिवर दयानन्द ने वेदादि आर्षग्रन्थो को ही प्रमाण माना है। स्वामीजी ने वेद के अनुसार ही एक ईश्वर, एक धर्म , एक धर्मग्रन्थ, एक मानवजाति व एक जीवनलक्ष्य बताया और इन्हें प्राप्त करने का मार्ग भी एक ही बताया है। शाश्वत सुख परमशान्ति और परमोच्च आनद को पाना ही हमारे जीवन की मुख्य लक्ष्य है। वास्तव में संसार में विचरनेवाले सभी मानवों का भी यही प्रमुख ध्येय है। दुर्भाग्य से हिन्दू ही इस बात को स्वीकार नहीं कर रहा है। हिन्दू ने यह मान लिया तो अन्य सभी इसे मान लेंगें, किन्तु विद्वानों व धर्मगुरूओं ने ईश्वरीय ज्ञान में किया हुआ भ्रष्टाचार और इसी के अनुसार आचार-विचार व व्यवहार में किया हुआ भ्रष्टाचार सबसे महाभयंकर है। इसके फल मानवमात्र को भोगने बाकी है।

अज्ञान, अविद्या, अन्धविश्वास व अधर्म का प्रचार कर मानवमात्र को आत्मकल्याण के सत्पथ से भटकाना व उसे दिग्भ्रमित करना यह सबसे बडा अपराध व महापाप है, सही रूप में यह नीचता का कर्म है, जो कि हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, नास्तिक, वामपन्थी, जैन, बौद्ध आदि सभी सम्प्रदाय बडे जोर-शोर से कर रहे हैं। इस कार्य को करते हेतु इस समय इन मजहबी लोगों में एक प्रकार की होड सी लगी है। दुनिया के अनजान लोगों को अपने सम्प्रदायों का अनुयायी बनाने में वे पुण्य मान रहे हैं तथा इन कार्यों में गर्व का अनुभव कर रहे है। सृष्टि कभी झूठ निर्णय नहीं देती। वह कभी बेईमान नहीं होती। सृष्टि की हर वस्तु पक्षपातरहित तथा सबका कल्याण करनेवाली सार्वभौम है। सूर्य, चन्द्र, हवा, पानी,अन्न, भूमि, वनस्पति, प्राणि आदि संसार में विद्यमान सभी चीजें सभी के लिए सर्वकाल खुली हैं। इनके पास हिन्दू, इस्लाम, ईसाई, बौद्ध, जैन आदि जैसा कोई भी साम्प्रदायिक वर्गीकरण नहीं है। ये वर्गीकरण मानव समाज की विकृति का परिणाम है। यह निसर्गक

thearyasamaj.org

नियमों के विरूद्ध बेईमानी है । मत-पन्थों के आधार पर ईर्ष्या, द्वेष, छलकपट, मारपीठ, लडाई, झगडें, युद्ध, क्रूरता आदि सबकुछ घोर अपराध व महापाप हैं । मनुष्य की सन्तान जब पैदा होती है, तब उसके शरीर पर किसी जाति या पन्थ को मुहर नहीं होती । यह वास्तविक व शाश्वत सत्य सभी के सामने होते हुए भी तथाकथित साम्प्रदायिक व जातिवादी लोग अज्ञान व अविद्या के वशीभूत होकर, दुराग्रहपूर्वक हठी बनकर मानव मानव में विभाजन कर रहें हैं । इस तरह की मजहबी व जातिवादी भेदभावों की संकीर्णता प्रस्थापित करना नीच कर्म है । इन अनिष्ट बातो से सामान्य लोगों को बचना चाहिए

जब तक मानव सृष्टि के शाश्वत सत्य ज्ञान अर्थात् विशुद्ध वेदज्ञान को आत्मसात नहीं करेगा और उसे सार्वभौमिक प्रसारित नहीं करेगा, तब तक वह अपने जीवन के लक्ष्य सुख-शान्ति, आनन्द को प्राप्त कर न सकेगा । इस अन्तिम ज्ञानतत्व को लोगों में फैलाना उसका कर्तव्य है । यदि मानव सृष्टि के नियमों के अनुसार व क्रम के अनुसार चलने की ईमानदारी न रखेगा, तब यह मानव नानाविध कष्टों व विपदाओं को झेलता ही रहेगा । अविद्याजनित महापापों के फल वह भोगता ही रहेंगा और सारी धरती को नरक बनायेगा । साथ ही वह स्वयं भी नानाविध रोगों, अशान्ति, दुःख, मृत्यू आदि फल भोगते रहेगा ।

हमारे देश के प्रधानमन्त्री श्री मोदीजी इन सभी तथ्यों को भलीभांति समझ लेवें और इन्हें जानकरदेश की जनता के सर्वकल्याण हेतु सुख, शान्ति व आनन्द का मार्ग प्रशस्त करें । इसके लिए वेद व सृष्टिविज्ञान द्वारा प्रतिपादित शाश्वत सत्य ज्ञान का नया कानून बनाकर उसका क्रियान्वयन करे और भारतवर्ष के सर्वोत्थान के साथ ही चक्रवर्ती राज्य की स्थापना के लिए प्रयास करें ।

वस्तुतः मूलभूत गलतियां विद्वानों द्वारा ही हुई हैं । इन्होंने वेदज्ञान व सृष्टिविज्ञान को भलीभांति समझा हीं नहीं । वेदों के भाष्य कर्त्ते समय व्याकरण के आधार न लेकर मन्त्रों के उलटे अर्थ किये । इतना होने पर भी इस ज्ञान को आचरण में लाने का प्रयास नहीं किया, गलत तरीके से इसका आचरण किया । साथ ही इन विद्वनों ने स्वयं को प्रस्थापित व श्रेष्ठ बनने के व लिए आर्ष ग्रन्थों में मिलावट की । ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्यादि वर्णो का आधार गुण, कर्म, स्वभाव न रहा । बल्कि जन्म के अनुसार बनते गये । ब्राह्मणों ने अन्य वर्णों के लिए वेदाध्ययन के द्वार बन्द किये व वेदाधिकार से वंचित रखा । ब्राह्मणेतर लोगों के लिए पुराण रचे गये । स्वार्थवश ब्राह्मणेतर लोगों को अज्ञान व अन्धविश्वास में रखा गया । उन्हें

thearyasamaj.org

भय व लालच देकर उनसे केवल अपनी सेवा करली और अनेकों पीढियों तक शोषण ही शोषण करते रहे । इनके साथ उच-नीचता व छुआछूत का बर्ताव किया । धार्मिक कार्यों से बहिष्कृत कर ये उन्हें दण्डित करते रहे । अमानवीय मूल्यों को धर्म की संज्ञा दी गयी । अपने अधिकारों के चलते बलिप्रथा, स्वर्ग-नरक, मृतक श्राद्ध, जडपूजा, मूर्तिपूजा जन्मना वर्णवजाति मानना, आत्मकल्याण के रास्ते से स्वयं भटकना और अन्यों को भी भटकाना, सामान्य लोगों को अपने अधिकार में लाने हेतु उन्हे लोभ-लालच देना, अनेकों धर्मगुरूओं व उनके अनेकों गुरूमन्त्रों का बनना, अवतारवाद, नानाविध वादों (अद्वैत, द्वैत, द्वैताद्वैत) की स्थापना तथा बहुविध देवी-देवताओं की स्थापना कर उनकी अलग अलग पूजापद्धतियां बनाना ! ऐसी एक नहीं, अनेकों गलतियों को लेकर वेद को माननेवाला प्रस्थापित वर्ग सामान्य प्रजाजनों पर अन्याय करता रहा ।

इसी तरह इनसे दूर गये व वेद को न माननेवाले लोग विभिन्न सम्प्रदाय व जातियों में भी हैं । ये भी उन्हीं की नकल करते हैं और प्रस्थापित होकर उन मत-प्रन्थों के अनुयायियों को अज्ञान में रखकर उनका शोषण करते हैं ।

अतः जबतक अज्ञान, अन्धविश्वास व सृष्टिनियमों के विरूद्ध आचारण रहेगा, तब तक परमात्मा की व्यवस्था के अनुसार सारे विश्व को दण्ड मिलता ही रहेगा । इसलिए विद्वानों, आचार्यों, धर्मगुरूओं व राजनेताओं को चाहिए कि वे सत्यज्ञान, सत्याचरण, धर्माचरण, न्यायाचरण करते हुए सबके सर्वकल्याण हेतु उपरोक्त महाभ्रष्टाचार दूर करने हेतु सतत प्रयास करें ।

उन्नीसवी शताब्दी के युगपुरूष, वेदोद्धारक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने उपरोक्त सारी मूलभूत गलतियों व दोषों को ठीक करने का सत्प्रयास किया । समग्र विश्व के सम्मुख वेद का सत्यज्ञान स्थापित किया और वेदानुसार आचरण करने की बात भी दृढता से कहीं । उन्होंने कहा- **यदि आत्मकल्याण चाहते हो, तो वेदमार्ग पर चलो** । स्वामीजी ने धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इन चार पुरूषार्थो की सटिक व्याख्या कर इन्हें मानव जीवन के प्रमुख उद्देश्य बताये । गुण कर्म व स्वभाव के अनुसार वर्णव्यवस्था को पुनः स्थापित किया । निरूक्त व्याकरण के आधार पर वेदों के आध्यात्मिक, आधिभौतिक व आधिदैविक भाष्य किये और सारे संसार को विश्वशान्ति, वैश्विक एकता, शाश्वत सुख, समृद्धि, शान्ति तथा आनन्द का मार्ग बताया । मानवमात्र के कल्याण हेतु विद्वानों से वेदपक्ष में सकारात्मक दृष्टिकोन अपनाते हुए जोर देकर कहा कि **मूलभूत गलतियों का सुधार किये बिना संसार की समस्याएं**

thearyasamaj.org

कभी भी मिट नही सकती और सुधार भी नहीं हो सकेगा । उन्होंने दुनिया के सभी विद्वानों को एक होकर सत्य को सत्य, और असत्य को असत्य कहने का आग्रह किया । दुर्भाग्य से तब से लेकर आज तक के पन्थों के धर्मगुरू व विद्वान अपने मत-पन्थों व जाति-सम्प्रदायों की संकीर्ण विचारधारा व उनके धर्मग्रन्थों में प्रतिपादित मिथ्या विचारों को छोडने के लिए तैयार नहीं है । ये सभी पक्षपाती बनें और तत्कालीन प्रस्थापितों के गलतियों को ही सम्भाल रहे हैं । इसी कारण दुनियां में बिगाड ही बिगाड आ रहा है और इस बिगाड का मूल कारण विद्वान रहे हैं । इसमें सुधार लाने का काम भी अब इन्हीं को करना होगा । आध्यात्मिक क्षेत्र में फैलते जा रहे इन भ्रष्टाचार व घोटालों के मामलों का निपटारा भी इन्हीं विद्वानों को करना होगा । दयालु परमात्मा संसार के सभी विद्वानों व धर्मगुरूओं को विशुद्ध वेदज्ञान व सृष्टि के शाश्वत सत्य को स्वीकार करने हेतु सत्प्रेरणा व सद्बुद्धि प्रदान करें, यही सविनय कामना !

-श्रद्धानन्द गुरूकुल आश्रम
आर्य समाज, परली वै. जि. बीड

- प्रान्तीय सभा के मानवकल्याणकारी उपक्रम -

१०४

- ‘वैदिक गर्जना’ मासिक मुखपत्र
- आर्य समाज दिनदर्शिका
- पू. हरिश्चन्द्र गुरूजी गौरव-‘मानवता संस्कार एवं आर्यवीरदल शिविर’
- आर्य कन्या वैदिक संस्कार शिविर
- पातञ्जल ध्यानयोग शिविर
- प्रान्तीय आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर
- पुरोहित प्रशिक्षण शिविर
- मानव जीवनकल्याण वेद प्रचार (श्रावणी) उपाकर्म अभियान
- स्व. विठ्ठलराव बिराजदार स्मृति विद्यालयीन राज्य. वक्तृत्व स्पर्धा
- सौ. तारादेवी जयनारायणजी मुंदडा विद्यालयीन राज्य.निबंध स्पर्धा
- सौ. कलावतीबाई व श्री मन्मथअप्पा चिल्ले (आनन्दमुनि) महाविद्यालयीन राज्य. वक्तृत्व स्पर्धा
- विद्यार्थी सहायता योजना
- सौ.डॉ. विमलादेवी व श्री डॉ.सु.ब.काले (ब्रह्ममुनि) महाविद्यालयीन राज्य. निबन्ध स्पर्धा
- स्व.पं. रामस्वरूप लोखण्डे स्मृति संस्कृत राज्य प्रतियोगिताएं
- मानवजीवन निर्माण अभियान - विद्यालय व महाविद्यालयों के लिए (वैदिक व्याख्यानमाला)
- शान्तिदेवी मायर स्मृति मानवनिर्माण एवं सेवा योजना
- स्व. भसीन स्मृति एवं मायर गौरव स्वास्थ्य रक्षा एवं चिकित्सा शिविर
- शान्तिदेवी मायर विधवा सहायता योजना
- वैदिक साहित्य भेट योजना
- पंथ-जातिप्रथा निर्मूलन अभियान
- वैदिक साहित्य प्रकाशन योजना
- आपत्कालीन सहायता योजना
- पर्जन्यवृष्टि यज्ञ अभियान
- गौ-कृषि सेवा योजना
- स्वा.सै.श्री गुलाबचंदजी लदनिया गौरव राज्य योगासन प्रतियोगिता
- सौ.धापादेवी गु. लदनिया गौरव राज्य प्राणायाम प्रतियोगिता

thearyasamaj.org

हैदराबाद कालीन वीरभूमि गुंजोटी में

गूंज उठा आर्यों का बलिदानी इतिहास

कहते हैं कि अमर बलिदानियों के प्रेरक इतिहास से समाज की वर्तमान स्थिति विकसित होने हेतु प्रखर ऊर्जास्त्रोत के रूप में काम आता है। दक्षिण के आर्यों की शौर्यगाथायें इस दृष्टि से महत्वपूर्ण मानी जाती है। हैदराबाद के आर्यवीर शहीद पं. वेदप्रकाश के अनूठे बलिदान ने नया इतिहास रचा है। इन्हीं की पावन जन्मभूमि गुंजोटी (जि. उस्मानाबाद)में गत माह आर्य जगत् की महान विद्वान् विभूतियों के सान्निध्य में सम्पन्न हुए ऐतिहासिक कार्यक्रमों से आर्यों के हृदय में राष्ट्रभक्ति, वेदप्रचार व समाजकार्य हेतु आशा की नई ज्योति जगी है।

अपूर्व उत्साह, अनोखा जोश तथा अद्‌भुत क्रान्तिकार्यों की प्रेरणा लेकर महाराष्ट्र के गुंजोटी ग्राम में हुतात्मा वेदप्रकाश बलिदान उत्सव तथा यहां की आर्य समाज के जीर्णोध्दारित नये विशाल भवन का उद्‌घाटन समारोह बडे ही हर्षोल्लासपूर्वक सुसम्पन्न हुआ। इस उपलक्ष्य में दि. २४,२५ व २६ नवम्बर २०१४ इन तीन दिनों में **वेदपारायण यज्ञ, भजन, प्रवचन भव्य जुलूस (शोभायात्रा) आदि** कार्यक्रमों का आयोजन हुआ, जिसमें महाराष्ट्र तथा सीमावर्तीय कर्नाटक के आर्यजन व महिलाओं ने सोत्साह भाग लिया। वेदपारायण यज्ञ के ब्रह्मापद को आर्यजगत् के उच्च कोटी के विद्वान लेखक, सम्पादक व कुशल संगठक डॉ. धर्मवीरजी ने सुशोभित किया।

अन्य आमन्त्रित विद्वानों में सुप्रसिद्ध आर्य इतिहास गवेषक प्रा. राजेन्द्रजी 'जिज्ञासु' कर्मठ संन्यासी पू. स्वामी धर्मानन्दजी, आचार्य स्वामी व्रतानन्दजी, सार्वदेशिक आर्य प्र. सभा के महामन्त्री एड्‌ प्रकाशजी आर्य आदियों का समावेश था। इन सभी विद्वन्मनीषियों ने अपने ओजस्वी वचनों द्वारा विभिन्न विषयों पर उपस्थित आर्यश्रोताओं पर अमृतधारा बरसाई।

– प्रथम दिवस के कार्यक्रम –

प्रातः प्रो.डॉ. धर्मवीरजी के ब्रह्मत्व में वेदपारायण यज्ञ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर उन्होंने कहा – मानवजीवन का महत्व व उसके उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए कहा कि संसार में श्रेष्ठतम कर्म करने हेतु ईश्वर ने मनुष्य को भेजा है उसकी यह यात्रा यज्ञमय होनी चाहिए।

इतिहासवेत्ता प्रा. राजेन्द्रजी जिज्ञासु ने कहा कि दक्षिण के आर्यो ने बडे ही शौर्य व त्याग भाव से हैदराबाद की जुलमी निजाम सरकार को टक्कर दी। मातृभूमि का रक्षा हेतु आर्य क्रान्तिकारों ने जो बलिदान दिया, उसे कभी भी भुलाया नहीं जा सकेगा।

इसी भांति सायंकाल भी यज्ञ व प्रवचंन सम्पन्न हुआ। रात्रिकालीन सत्र की

thearyasamaj.org
शुरूआत भजनोपदेशक पं. प्रतापसिंहजी चौहान के से हुई । तत्पश्चात् उडीसा से पधारे आमसेना गुरूकुल के संस्थापक आचार्य स्वामी धर्मानन्दजी सरस्वती ने आर्यों को सम्बोधित किया । उन्होंने कहा - महर्षि दयानन्द ने कडी साधना व तपस्या के बलपर संसार को वेदों का सरला बतलाया। इसी वेदज्ञान से धरती पर सुख व शान्ति की स्थापना हो सकती है । आर्यों को चाहिए कि अब समाज के नीचले स्तर तक इस ज्ञान को फैलावें । स्वामी व्रतानन्दजी ने ओजस्वी विचारों को रखते हुए बताया कि मानवजाति की रक्षा के लिए जिन्होंने अपने प्राणों की आहुतियां दी, उन शहीदों की याद में ऋषिभक्तों को जागना चाहिए और समाज के नवनिर्माण का व्रत लेना चाहिए । प्रो. जिज्ञासुजी ने बताया कि महाराष्ट्र की आर्य वीरांगणाओं का भी स्वतंत्रता संग्राम में काफी योगदान रहा है ।ईट की गोदावरीबाई टेके जैसी आर्यनारी का बलिदान इस दृष्टि से महत्वपूर्ण माना जाएगा ।

- दूसरे दिन के कार्यक्रम -

प्रातःकालीन यज्ञ के अवसर पर ब्रह्मा डॉ.धर्मवीरजी ने यज्ञीय विधिविधान पर प्रकाश डाला । उन्होंने बताया कि हम अपनी सुविधाओं के अनुसार यज्ञ करें । बाकी बातें गौण हैं, बाहरी साधनों व कर्मकाण्ड के अपेक्षा अन्दर की आत्मा से यज्ञ होना आवश्यक है । इसके लिए कोई नयी पद्धति नहीं है । बाहरी साधनों या विधिके आगेपीछे होने कोई पाप नहीं लगता । आशीर्वाद के सन्दर्भ में प्रो. धर्मवीरजी ने कहा कि आशीर्वाददाता अपनी इच्छा को अभिव्यक्त करता हैं । देवता वरदान देते है, मनुष्य आशीर्वाद देते हैं और राक्षस शाप देते हैं । आशीर्वाद कभी भी व्यर्थ नहीं जाते । यजमानों को आशीर्वाद देते समय उनके अच्छी गुणों की प्रशंसा करनी चाहिए । क्योंकि यजमान समाज को बढानेवाला होता है । यदि सार्वजनिक व सामूहिक रूप में यजमानों की प्रशंसा करे, तो अच्छे कामों में वृद्धि होगी।

प्रातःकालीन ज्ञान सत्र में पं. सोगाजी घुन्नर व पं. प्रतापसिंहजी चौहान ने प्रेरक मधुर भजन प्रस्तुत किये । सभा के उपदेशक पं. सुधाकरजी शास्त्री ने भी इस अवसर पर विचार रखें । प्रो. राजेन्द्रजी 'जिज्ञासू' ने म. दयानन्द और विवेकानंद के विचारों व कार्यों में भारी भेद बताया । दयानन्द की तुलना में विवेकानन्द का स्थान कुछ भी नहीं है । वेदज्ञान, राष्ट्रसेवा व बलिदानी शिष्य परंपरा आदि विषयों में विवेकानंद दयानन्द से सदैव पीछे रहते है ।

स्वामी धर्मानन्दजी ने बताया कि ईसाई लोग धन व सेवा का लालच देकर देश में बडे पैमाने पर हिन्दुओं को ईसाई बना रहे हैं । हमारे पिछडे क्षेत्र में इस तरह की घटनांए अधिक मात्रा में घट रही हैं । इस पर हमनें शुद्धि आन्दोलन चलाकर उन सभी को आर्य समाज की राह दिखाई है ।

thearyasamaj.org

आनेवाले युग में धर्मान्तरण के दृष्टचक्र को रोकने के लिए हमें प्रयास करने होंगे। इस बार में देश के किसी भी हिन्दू संगठन को चिन्ता नहीं है। केवल आर्य समाज ही यह कार्य कर सकता है। स्वामी व्रतानन्दजी ने कहा कि देश की आजादी के बाद आर्य समाज ने यदि अपना राजनैजिक संगठन खडा किया होता, तो आज वह देश का नेतृत्व करता।

दोपहर के सत्र में राज्य के महिला व पुरूषों ने भजन प्रस्तुत किये। साथ ही उपरोक्त आमन्त्रित विद्वानों ने भी श्रोताओं को मार्गदर्शन किया। सायंकालीन वेदपारायण यज्ञ के उपरान्त डॉ. धर्मवीरजी ने आध्यात्मिक विषय को लेकर सारगर्भित चर्चा की। उन्होंने कहा- संसार में दुःखमिश्रित सुख विद्यमान है। छोटे से सुख के लिए मनुष्य बहुत कडा परिश्रम करता है। तब कहीं ऐसा सुख जो दुःखमिश्रित न हो, (पूरी तरह से दुःखरहित सुख) अर्थात् पूर्ण आनन्द के लिए हमें प्रयास करना चाहिए, जो कि परमात्मा के सिवा अन्य कहीं भी नहीं हैं।

रात्रिकालीन सत्र में सभा के उपप्रधान श्री दयाराम बसैये ने कार्यकर्त्ताओं जागृत रहने का आवाहन किया। उन्होंने कहा कि 'देश में राजकीय परिवर्तन आने से अब वैदिक विचारों के प्रचार हेतु अनुकूल वातावरण बन रहा है। समय पर वर्षा न होने से जल की समस्या ने उग्ररूप धारण किया है, इससे बचने के लिए बडे पैमाने पर पर्जन्यवृष्टि यज्ञों का आयोजन करना है। इसके लिए महाराष्ट्र सरकार के सहयोग हेतु मुख्यमन्त्रीजी से हमारी बात चल रही है। ऋषि ऋण को चुकाने के लिए आर्यों को अन्दर-बाहर झाडू लगाना भी आवश्यक है।'

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री प्रकाशजी आर्य ने आर्य संगठन को मजबूत करने हेतु सभी को यत्नशील रहने का अनुरोध किया। उन्होंने बताया कि 'समग्र विश्व को वेद ही सुख-शान्ति दिला सकता है। आर्य समाज का हर एक कार्यकर्त्ता अपनी आर्यत्व की पहचान बनाये रखे और वैदिक ज्ञानधारा को समाज के हर एक कोने में पहुंचाने में तत्पर रहें। आजकल लोगों का आर्य समाज की ओर देखने का नजरिया बदल चुका है। इसे अनुकूलता में परिवर्तित करने की जिम्मेदारी आर्यों पर है। अविद्या व अन्धःकार का नाश करने हेतु हमें जाग उठना है, हम मिशनरी भाव से काम करें। केवल नारेबाजी से काम नहीं चलेगा। साम्प्रदायिक लोग धर्म का नाम लेकर अपनी संख्या बढाना चाहते हैं, किन्तु आर्य समाज तो संख्यावृद्धि के बजाय मानव को एक चरित्रवान, नेक, राष्ट्रनिष्ठ, अध्यात्मसम्पन्न, ईश्वरभक्त व आदर्श मानव बनाना चाहता है, इसलिए कम संख्यावाले क्यों न हो, सिद्धान्तवादी विचारोंवाले समाज का सृजन

thearyasamaj.org

करना इसका उद्देश्य है ।' बढते पाखण्डी बाबाओं के सन्दर्भ में उन्होंने कहा कि 'आज के वैज्ञानिक युग में भी पढे लिखे लोग आसाराम, रामपाल जैसे बाबाओं के चंगुल फंसते जा रहे हैं । उनका यह व्यर्थ का भटकना आध्यात्मिक अज्ञान का परिणाम है । इसलिए अब आर्य समाज को अधिक सक्रिय होने की आवश्यकता है ।' उन्होंने स्मरण दिलाया कि आचार्य बलदेवजी ने हरियाणा के आर्यों को लेकर सन् २००६ से पाखण्डी सन्त रामपाल के विरूद्ध संघर्ष जारी रखा था । उसी का परिणाम है कि रामपाल आज जेल में है और उसके आलिशान महल पर सरकार ने नियन्त्रण कर लिया है । सही अर्थों में यह आर्य समाज की विजय है ।'

प्रो. राजेन्द्रजी जिज्ञासु ने अपने व्याख्यान में हैदराबाद संग्राम के आर्य वीरों चर्चा की । उन वीरों की जन्मभूमियों (ग्रामों) व उनकी जन्मदात्रियों (माताओं) को भूला देने पर उन्होंने खेद जताया । उन्होंने कहा कि 'यदि आर्य बलिदानी न होते, तो दक्षिण के लोगों को मराठी पढने का अधिकार न होता । हुतात्मा गोविन्दराव, शिवचन्द्र, धर्मप्रकाश, वेदप्रकाश, माता गोदावरी टेके आदियों ने यहां की आर्यजाति में प्राण फूंके थे , तब कहीं स्वतंत्रता की मांग जाग उठी ।' उमरगा के आर्यवीर रामचन्द्र जैसे बलिदानी के जीवन से अवगत कराते हुए श्री जिज्ञासुजी ने कहा कि 'श्री रामचन्द्रजी के घर पर छापा मारकर पुलिस ने उनके घर से सत्यार्थप्रकाश हस्तगत किया और उन्हें गिरफ्तार किया । बाद में रामचन्द्रजी की मृत्यु का कोई पता नहीं चला, यह भी एक बलिदान था, जिसे हम भूल चुके हैं ।' उन्होंने स्मरण दिलाया कि निजाम अपनी अन्तिम अवस्था में पं. नरेन्द्रजी से मिलना चाहता था । दूरभाष पर पण्डितजी से बातचित कर अपनी इच्छा प्रकट की । जब पं. नरेन्द्रजी उनसे स्वयं मिलने गये, तब निजाम में पण्डितजी का स्वागत किया । अन्तिम भेंट में निजाम ने कहा – **'मैंने आपको मिटाने का भरसक प्रयास किया । अनेकों कष्ट दिये, आपकी टांग तक तोड दी, परंतु मैं आपको मिटा न सका । मैंने जो किया, वह आर्य समाज के विरोध में किया । मेरे इन पापों को क्षमा करना । मेरे लिए अब आप प्रार्थना करो ! दुआएं करो !'** तब पं. नरेन्द्रजी ने कहा – **'मैंने आर्य जाति व मातृभूमि के लिए काम किया है । ऋषि के मिशन को पूरा करने, वेद के आदेश, उपदेश व सन्देश को जन-जन तक फैलाने के लिए काम किया है ।'** श्री जिज्ञासुजी ने आगे बताया – 'बहादुरयार जंग भी पं. नरेन्द्रजी की आंखों से नजर तक मिला न सका । कितने महान् व तेजस्वी थे पं. नरेन्द्रजी !'

पू. स्वामी धर्मानन्दजी ने कहा कि –'आर्यवीरों के बलिदान के कारण

thearyasamaj.org

आज आर्य समाज की विचारधारा का धरती पर अस्तित्व है, अन्यथा ऋषि की यह पौध कभी की उखड गयी होती । इसी बलिदानी परम्परा सम्प्रति जीवित रखना आवश्यक है । दुर्भाग्य से आज हमें अपने ही आदमियों से लोहा लेना पडा रहा है । आर्य समाज के सेवा का प्रभाव है कि उसका भूतकाल उज्ज्वल रहा है । आज हमारी सभाओं व समाजों के पदाधिकारी आपस में झगड रहे हैं । वेदप्रचार को प्राधान्य देना छोडकर पद के लोभी बन रहे हैं । एकता के अभाव में आर्य समाज की नैया डगमगा रही है । महर्षि दयानन्द ने सच ही कहा था- **न जाने आपसी फूट का यह भूत कब खत्म होगा** । कर्मफल पर हमारा विश्वास नहीं रहा है । ईश्वर की व्यवस्था को भूल जाने से आज आर्यों की यह शोचनीय दुरवस्था हो चुकी है । सर्वत्र निराशा छाई हुई है ।'

इस अवसर पर नयनकुमार आचार्य ने भी **आत्मकल्याण** इस विषय पर विचार रखें । उन्होंने कहा कि आत्मा के अनुसार चलने से संसार की सारी समस्याएं खत्म होगी । आत्मशक्ति को विस्मृत करना ही दुःखों का कारण है ।

इन दो दिवसीय कार्यक्रमों का संचालन वैदिक विद्वान पं. राजवीरजी शास्त्री एवं पं. प्रियदत्तजी शास्त्रीजी ने बडी कुशलता के साथ किया । यज्ञ की व्यवस्था व नियोजन भी ये दोनों विद्वद्वर ही देखते रहें । वेदपारायण यज्ञ में सभा के उपदेशक पं. सुधारकजी शास्त्री ब्रह्मांजी डॉ.धर्मवीरजी का का सहयोग करते रहे । वेदपाठ श्रद्धानन्द गुरूकुल के स्नातक ब्र. दयानन्द आर्य एवं ब्र. रूपेश, ब्र. व्यंकटेश आर्य आदि करते रहें । इन सारे कार्यक्रमों को श्रोतागण तल्लीन होकर सुनते रहे ।

(शेष फरवरी २०१५ के अंक में)

प्रस्तुति- डॉ.नयनकुमार आचार्य

श्रद्धानन्द गुरूकुल फार्मेसी, परली-वै.

आर्य समाज परली द्वारा संचालित श्रद्धानन्द गुरूकुल फार्मेसी में सम्प्रति नई-नई आयुर्वेदिक औषधियां बनाई गयी हैं । विभिन्न वनस्पतियों तथा मौल्यवान पदार्थो के सम्मिश्रण योग से बनी ये औषधियां शारीरिक, मानसिक व बौद्धिक स्वास्थ्य के लिए अत्यंत लाभकारी हैं । हाल ही में आयुर्वेद के विशेषज्ञों द्वारा त्रिफला चूर्ण, अविपत्तिकर चूर्ण, लवणभास्कर चूर्ण, सितोपलादिचूर्ण स्वादिष्टचूर्ण, च्यवनप्राश, आयुर्वेदिक चाय, ब्राह्मीआंवला तेल, आंवला कैन्डी, गोतीर्थासव आदि औषधियाँ बनाई गयी है । अतः सभी आयुर्वेद प्रेमी बंधुओं से निवेदन हैं कि वे शीघ्र ही गुरूकुल फार्मेसी से सम्पर्क कर इन बहुगुणी औषधियों को खरीदकर स्वास्थ्य लाभ उठावें तथा अन्यों को भी प्रेरित करें ।

संपर्क - विलास बनसोडे (फार्मेसी प्रमुख) मो. ९०११६०४६११

thearyasamaj.org

॥ ओ३म् ॥

माझ्या मराठीचा बोलु कवतिके। परि अमृतातेही पैजेसीं जींके ।
ऐसी अक्षरेंचि रसिकें । मेळवीन ॥ (संत ज्ञानेश्वर)

मराठी विभाग

उपनिषद सन्देश प्रकृती उपासकांचा अंधःकारात प्रवेश

अन्धन्तमः प्रविशन्ति येऽसम्भूतिमुपासते ।
ततो भूय इव ते तमो य उ सम्भूत्यां रताः ॥

जे लोक उत्पत्तिरहित अशा सनातन प्रकृतीची उपासना करतात, ते घोर अंधःकारात प्रवेश करतात. तसेच जे प्रकृतीपासून उत्पन्न कार्य जगतात म्हणजेच मायामोहात रमून जातात, असे लोक त्याहून ही अधिक अंधःकारमय काळोखात प्रवेश करतात.

(ईशोपनिषद १२)

दयानंदांची अमृतवाणी

शरीरातील पंचकोश

शरीरातील पंचकोश पुढील प्रमाणे आहेत. -१) **अन्नमय कोश**- हा त्वचेपासून हाडांपर्यंत असणाऱ्या पदार्थाचा समुदाय आहे. तो पृथ्वीमय म्हणजे पृथ्वीतत्त्वाचा बनलेला आहे. २) **प्राणमय कोश**- हा पंचप्राणांचा बनलेला आहे. **प्राण** म्हणजे आतून बाहेर जाणारा वायू. **अपान** म्हणजे बाहेरून आत येणारा वायू. **समान** म्हणजे नाभीमध्ये राहून साऱ्या शरीरात रस पोचविणारा वायू. **उदान** म्हणजे कंठामध्ये राहून अन्न पाणी पोटात ढकलतो आणि बलपराक्रम वाढवितो तो वायू. आणि **व्यान** म्हणजे जीव ज्याच्यापासून शरीराच्या साऱ्या हालचाली करवून घेतो तो वायू. ३) **मनोमय कोश**- याच्यामध्ये मनासह अहंकार, वाचा, पाय, हात, गुदा व जननेंद्रिय या पाच कर्मेन्द्रियांचा समावेश होतो. ४) **विज्ञानमय कोश** -यामध्ये बुद्धी, चित्त आणि कान, त्वचा डोळे, जीभ व नाक ही पाच ज्ञानेंद्रिये यांचा समावेश होतो. त्यांच्या योगाने जीव ज्ञानग्रहण वगैरे ज्ञानविषयक व्यवहार करतो.

५)**आनंदमय कोश**. यामध्ये प्रीती, प्रसन्नता, अधिक आनंद यांचा समावेश होतो.

कारणरूप प्रकृती हा या कोशाचा आधार आहे.
या पाच कोशांच्या योगाने जीव सर्व प्रकारची कर्मोपासना
व ज्ञानादी व्यवहार करतो. (सत्यार्थ प्रकाश नववा समुल्लास)

thearyasamaj.org

सुभाषित रसास्वादः - चारित्र्यवंतांमुळेच पृथ्वीला शोभा -

अप्रियवचनदरिद्रैः प्रियवचनाढ्यैः स्वदारपरितुष्टैः ।
परपरिवादनिवृत्तैः क्वचित् क्वचिन्मंडिता वसुधा ॥

अर्थः- ज्यास कठोर भाषण कधीही ठाऊक नाही, म्हणजेच प्रियवचन हेच ज्याचे धन असते, जे सर्वदा स्वस्त्रीच्या ठायी संतुष्ट (समाधानी) असतात. आणि जे दुसऱ्यांच्या निंदेविषयी पराङ्मुख असतात, असे चारित्र्यसंपन्न संत महात्मे समाजात क्वचितच आढळतात. अशा सत्पुरूषांमुळेच ही पृथ्वी सर्वदृष्टीने अलंकृत झाली (सजली) आहे. या भूमंडळाला शोभा असते, ती अशा शीलवान थोर पुरूषांमुळेच

(वर्तमान युगात तर असे सच्चरित्रयुक्त लोक सापडतच नाहीत. म्हणूनच आज या पृथ्वीमातेचे रूप भकास व दीनवाणे पाहावयास मिळत आहे. **'साधवो न हि सर्वत्र ।'** या सूक्तीचा प्रत्यय येतो.)

(भर्तृहरिविरचित नीतिशतक - १०५)

गाथा वाचू दयानंदाची | **बोधकथा क्र. ५१**

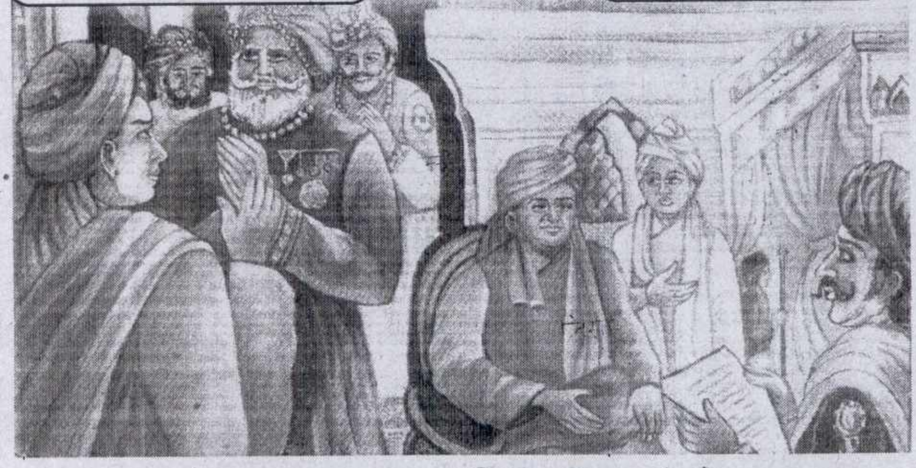

शाहपुरात राहून कल्याणकारी योजनांची सुरूवात

-डॉ. भवानीलाल भारतीय

उदयपुरहून निघून स्वामीजी शाहपुर नावाच्या एका छोट्याश्या वतनाला आले. येथील शासक राजाधिराज नाहरसिंहांनी त्यांचे सहृदय स्वागत केले. आपले निवासस्थान असलेल्या रेतीबाग राजमहाल परिसरात स्वामीजींना राहण्यासाठी त्यांनी एका बंगल्यासमान भवनाची निर्मिती केली. हे राजे परिपक्व बुद्धी बाळगणारे, प्रजेची

thearyasamaj.org

चांगली काळजी घेणारे व लोकोपयोगी कामे करण्यात नेहमीं तत्पर असे नरेश होते. त्यांनी दररोज नियमाने स्वामीजींचा सत्संग करण्याचे व तसेच प्रवचनांचा लाभ घेण्याचे मनःपूर्वक ठरविले. या संकल्पास त्यांनी क्रियात्मक रूपही दिले. याही ठिकाणी स्वामीजींनी राजांना मनुस्मृती व योगदर्शन शिकविले आणि विशेषिक दर्शनच्या कांही भागांची व्याख्या केली. वैदिक उपदेशकांना आमंत्रित करून जनतेत धर्मप्रचार व संस्कारनिर्मिती करण्याची जबाबदारी स्वामीजींनी त्यांच्यावर सोपविली आणि म्हंटले की राजे आपण आपल्या प्रजेच्या हितासाठी कल्याणकारी योजना बनवाव्यात व त्यांची सुरूवात देखील करावी, जेणे करून जनतेची आर्थिक प्रगती होईल. त्यांनी शेतीकरिता साहाय्यभूत सिंचनाची व्यवस्था चांगल्या प्रकारे क्रियान्वित करण्याचा आग्रह धरला आणि लोकांच्या शैक्षणिक विकासासाठी पाठशाळा उघडण्याची प्रेरणा दिली. स्वामीजींच्या आदेशाने राजे नाहरसिंहांनी आपल्या मुलांवर वैदिक संस्कार केले आणि राजमहालात दररोज अग्निहोत्र करण्याची व्यवस्था केली. याचाच परिणाम आहे की स्वामीजींनी त्या काळात आरंभीलेल्या राजकीय अग्निहोत्राची अग्नी आज देखील तेथील राजभवनात सुव्यवस्थितपणे प्रज्वलित आहे. नाहरसिहांनंतर इतर शाहपुर राजांनी सुद्धा आपले पूर्वज असलेल्या या राजांच्या आज्ञेला शिरोधार्य मानून वैदिक धर्म आणि आर्य समाजाबाबत आपली अपार श्रद्धा व निष्ठा असल्याचा परिचय करून दिला आहे. नंतरच्या राजांपैकी महाराजे उम्मेदसिंह व त्यांचे सुपुत्र युवराज सुदर्शनदेवजी यांनी वैदिक धर्माला राजकीय धर्माप्रमाणे सन्मान दिला आणि वेळोवेळी सर्वश्री स्वामी नित्यानंदजी, पं. धुरेंद्रजी शास्त्री, पं. गंगाप्रसादजी उपाध्याय, पं. रमेशचंद्रजी शास्त्री, पं. भगवान स्वरूप न्यायभूषण आदी विद्वानांना आमंत्रित करून त्यांकरवी जनतेत धर्मप्रचार घडवून आणला आणि या सर्वांवर संस्कार निर्मितीची जबाबदारी सोपविली.

('दयानंद चित्रावली'चा मराठी अनुवाद)

-३/५, शंकर कॉलनी, श्रीगंगानगर (राज.)

श्री बाहेती यांचे धन्यवाद !

परळी येथील सामाजिक कार्यकर्ते व आर्य समाजाचे स्नेही श्री बद्रीनारायणजी बाहेती यांनी आपल्यातर्फे वैदिक गर्जनेच्या डिसेंबर २०१४ अंकासाठी रंगीत मुखपृष्ठ छापून दिले आहे. यास्तव त्यांचे महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेच्या वतीने हार्दिक धन्यवाद ! श्री बाहेती हे आर्य समाज व सभेच्या प्रकाशन कार्यास नेहमीच सहकार्य करतात. किफायतशीर दरामध्ये विविध कार्यक्रमांची परिपत्रके व वैदिक गर्जना अंकाचे प्रकाशन दर महिन्यास केले जाते. यानिमित्त परमेश्वराकडे बाहेती परिवाराच्या सुख-समृद्धीस्तव कामना. – मंत्री, महाराष्ट्र आर्य प्र.सभा

thearyasamaj.org

९०० व्यां जयंतीवर्षानिमित्त

गणितविश्वाचे बुद्धिसागर - 'भास्कराचार्य'

-नागनाथ धर्माधिकारी

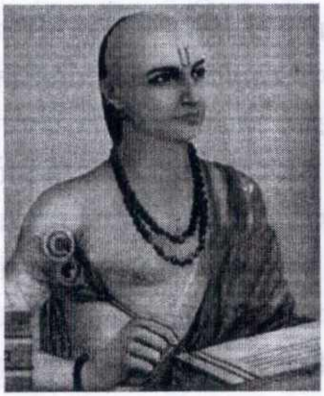

प्राचीन गणिताबद्दल विचार करतांना सुमारे १५०० वर्षापूर्वीचे आर्यभट्ट, पद्मनाभ, वराहमिहीर ब्रह्मगुप्त आठवतात. त्यानंतर **गणितसारसंग्रह** देणारे महावीर जैन, **सिद्धांत शिरोमणी** हा ग्रंथ देणार भास्कराचार्य व **तंत्रसंग्रह** देणारे नीळकंठ या सर्वांचे स्मरण होते. गणित क्षेत्राच्या प्रगतीच्या पुढील काळात बहुतेकांना ज्ञात असलेले रामानुजन् व स्वामी भारती कृष्णतीर्थ यांचा विशेष उल्लेख आवश्यक आहे. मात्र या सर्व गणितज्ञांमध्ये खऱ्या अर्थाने गणितविश्व समृद्ध करणारे भास्कराचार्य हे बुद्धिसागर आहेत. गणितीय कुटुंबात इ. १११४ मध्ये जन्मलेल्या भास्कराचार्यांनी खगोलशास्त्रात पारंगत असलेल्या आपल्या वडिलांकडून (महेश्वर) शिक्षण घेऊन गणित व खगोलशास्त्र हे आवडीचे विषय कसे झाले ? यासंबंधींचं विवेचन ग्रंथात लिहून ठेवलं आहे. भास्कराचार्यांच्या ठायी असलेल्या काव्य, गणित, व्याकरण व खगोलशास्त्र इत्यादींच्या व्यासंगामुळे त्यांना **गणकचक्र चुडामणी** ही उपाधी गणेशदैवज्ञ यांनी दिली होती. भास्कराचार्यांनी वयाच्या ३६ व्या वर्षी **सिद्धांत शिरोमणी** या नावाने १४५० श्लोकांचा ग्रंथ लिहिला. त्यानंतर **करणकुतूहल, वशिष्ट अतुल्य, सर्वतोभद्राय** व **विवाहपताला** हे अप्रतिम ग्रंथ लिहिले.

सिद्धांत शिरोमणी ग्रंथाचा पहिला भाग हा १३ प्रकरणांचा असून तो त्यांनी आपल्या मुलीच्या लीलावती या नावाने लिहिला आहे. या भागात अंकगणितासंबंधी २७६ श्लोक आहेत. दूसरा भाग **बीजगणित** हा १२ प्रकरणांचा व एकूण २१३ श्लोक असलेला आहे. भूमिती, गोलासंबंधीचा तिसरा भाग **गोलाध्याय** हा ५०१ श्लोकांचा आहे व ग्रहासंबंधी गणिताचा **ग्रहगणित** हा ४५१ श्लोकांचा चौथा भाग आहे.

भास्कराचार्यांनी आपली मुलगी लीलावती व मुलगा लोकसमुद्र यांना गणितात आवड निर्माण करूण पारंगत केले. पुढे इ.स. १२०७ मध्ये लोकसमुद्र यांनी भास्कराचार्यांच्या गणिती तत्वांच्या अभ्यासाकरिता एका शाळेची स्थापना केली. भास्कराचार्य स्वतः ब्रह्मगुप्त व वराहमिहीर यांच्या सहकार्याने उज्जैन येथे उभारलेल्या खगोलशास्त्राचे शिक्षण देणाऱ्या

thearyasamaj.org

शाळेचे प्रमुख होते. भास्कराचार्यांनी स्वतः लिहून ठेवलं आहे की त्यांनी व्याकरणाची ८ पुस्तकं, औषधशास्त्राची ६ पुस्तकं, तर्कशास्त्राची ६ पुस्तकं, गणिताची ५ पुस्तके, चार वेद, भरतशास्त्रावरील ५ पुस्तकं व दोन मीमांसा या सर्वांचा ३६ वर्ष अभ्यास केला व त्याबद्दल चिंतन केले. त्यामुळेच प्राचीन खगोलशास्त्राची संपूर्ण माहिती, **सिद्धांत शिरोमणी** मध्ये आहे. व अगोदरच्या या विषयावरील कोणत्याही पुस्तकापेक्षा ते सरस आहे, असं विद्वानांचं मत आहे. भास्कराचार्यानंतर गणितासंबंधी काव्यात्मक सुरेख विवेचन कोणीही केलेलं नाही. लीलावती ची भाषातरं विविध देशात, विविध भाषेत झाली. मोगलराजा अकबराच्या आज्ञेवरून फिझी याने इ.स. १५८७ मध्ये लीलावतीचें पर्सियन भाषेत भाषांतर केलं. स्ट्राची यांनी इ.स. १८१३ मध्ये इंग्रजीत भास्कराचार्यांचे कार्य नेलं. तर खानापूरशास्त्री यांनी ते मराठीत इ.स. १८९७ मध्ये आणलं. पं. सुधाकर द्विवेदी यांनी संस्कृतमध्ये त्यावर भाष्य लिहिलं आहे. इ.स. १६१२ मध्ये **नवांकुरां** या नावाने प्रसिद्ध असलेलं त्यांच्या कार्यावरील भाष्य कुस्नदेवाजन यांनी लिहिलं आहे.

ब्रिटिश राजवटीत इ.स. १८५७ ला मुंबई, कलकत्ता व मद्रास येथे विद्यापीठांची स्थापना झाली. पण त्या अगोदर ७०० वर्षे भास्कराचार्यांच्या पुस्तकाद्वारेच गणित शिकविलं जायचं. एवढ्या अफाट कर्तृत्वाला प्रणाम म्हणूनच इ.स.१९८१ मधील २० नोव्हेंबरला भारतातील कापुस्तीन यार येथून ४३६ किलो वजनाचं **भास्करा** हे यान अवकाशात सोडलं गेलं. हे यान टेलिमेट्री, ओशनोग्राफी, हैड्रोलॉजी यासंबंधी माहिती देत असतं.

भास्कराचार्यांचे गणित ७०० वर्ष ते शिकवलं गेलं. ते हस्तलिखित प्रतींमधूनच देशाच्या कानाकोपाऱ्यात हस्तलिखितच जात होतं. १६ व्या शतकात इतर देशांमध्ये त्यांचे कार्य पोहचलं, तेव्ह होकायंत्रासारखं दिशादर्शक गणित पाहून सर्व ठिकाणी आश्चर्ययुक्त कौतुक होत गेलं.

मतमतांतरांच्या सध्याच्या कोलाहलात आपण आपल्या सद्सद्विवेक बुद्धीला स्मरून आपल्या प्रभावक्षेत्रातील समूहाला हळूहळू चुचकारून भास्कराचार्य व इतर तत्सम प्रकांड पंडिताचं ज्ञानसंस्कृतीतील गतवैभव सांगितल्यास मनाची, आत्म्याची ऊर्जा पराधीनतेकडून स्वाधीनतेकडे निश्चित येईल व अपूर्णत्वाकडून पूर्णत्वाकडे म्हणजेच अपूर्णांकाकडूनच पूर्णांकाकडे जाणारा आपला जीवनप्रवास आनंददायी होईल, एवढं नक्की !

(दै. महाराष्ट्र टाईम्स – दि.५/१०/२०१४ **संवाद** पुरवणीतून साभार)

वैदिक गर्जनेचा **डिसेंबर २०१४** हा अंक कांही तांत्रिक कारणांमुळे वेळेवर प्रकाशित होऊ शकला नाही. त्यामुळे वाचकांकडे पाठविण्यास विलंब होत आहे. त्याबद्दल आम्ही दिलगीर आहोत. वाचकांना कराव्या लागणाऱ्या प्रतिक्षेस्तव क्षमस्व !– संपादक

thearyasamaj.org

'हु.वेदप्रकाश अमर रहे' च्या जयघोषाने गुंजोटी परिसर दुमदुमला.

शौर्यस्थळी आर्यजनांची मांदियाळी

–ज्ञानकुमार आर्य

हैद्राबाद स्वातंत्र्यसंग्रामातील लढवय्ये सेनानी व प्रख्यात आर्यवीर हुतात्मा वेदप्रकाश आर्य यांच्या अमरबलिदानाने पावन झालेल्या धाराशिव(उस्मानाबाद) जिल्ह्यातील **गुंजोटी** (ता.उमरगा) या गावी महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभा व आर्य समाज गुंजोटी यांच्या संयुक्त विद्यमाने दि.२४,२५ व २६ नोव्हेंबर रोजी भरगच्च अशा प्रेरणादायी कार्यक्रमांचे आयोजन करण्यात आले होते.

आर्य जगताचे प्रसिद्ध तपस्वी, सन्यासी, विद्वान व मान्यवर आर्य नेत्यांच्या उपस्थितीत वेदपारायण यज्ञ, वैदिक व्याख्याने, भजन आदी उद्‌बोधनपर कार्यक्रमांना ऐकण्यासाठी राज्यातील अनेक आर्य माता-भगिनी व सज्जन मंडळींनी हजेरी लावली होती. हैद्राबाद स्वातंत्र्य संग्रामापूर्वी प्रसिद्धीस आलेल्या आर्यसमाज गुंजोटीच्या इमारतीची अलीकडील काळात दुरवस्था झाली होती. तेथे कार्यक्रम घेणेदेखील कठीण झाले होते. ही बाब लक्षात घेऊन महान समाज सुधारक **स्वामी श्रद्धानंदजी सरस्वती (हरिश्चंद्र गुरुजी)** यांनी या आर्य समाजाच्या इमारतीचा जीर्णोद्धार करण्याचे आवाहन सभा व आर्य समाजांना केले. त्यांच्या प्रेरणेने स्थानिक आर्य कार्यकर्ते व सभेच्या पदाधिकाऱ्यांनी एकत्र येऊन जंवळपास ३० लाख रुपयांचा निधी दानाच्या माध्यमाने संकलित केला. सभेचे प्रधान डॉ.ब्रह्ममुनिजी, श्री लखमसीभाई वेलानी, दयाराम बसैये, तसेच स्वामी श्रद्धानंदजींचे अनेक शिष्य व दानशूर आर्य कार्यकर्ते यांच्या मदतीने व परिश्रमाने आर्य समाज गुंजोटीची नवी वास्तू उभी राहिली व हा कार्यक्रम पार पडला. या तीन दिवसीय कार्यक्रमामध्ये आमसेना गुरुकुल, ओरीसाचे संस्थापक आचार्य स्वामी धर्मानंदजी, आचार्य स्वामी व्रतानंदजी, आर्य समाजाचे इतिहास संशोधक प्रा.राजेंद्रजी जिज्ञासू, परोपकारिणी सभेचे का.प्रधान प्रो.डॉ.धर्मवीरजी, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधी सभेचे मंत्री ॲड.प्रकाशजी आर्य हे सहभागी झाले व त्यांनी राज्यातून आलेल्या अनेक आर्य कार्यकर्त्यांना मार्गदर्शन केले.

या त्रीदिवसीय वेदपारायण यज्ञाचे ब्रह्मापद डॉ.धर्मवीरजी आचार्य यांनी भूषविले तर श्रद्धानंद गुरुकुल परळीच्या ब्रह्मचाऱ्यांनी वेदपाठ केला. यज्ञानंतर डॉ.धर्मवीरजी यांनी

thearyasamaj.org

आपल्या ओजस्वी वाणीतून वैदिक सिद्धांतावर आधारित व्याख्यांनाद्वारे श्रोत्यांना मार्गदर्शन केले. सभेचे भजनोपदेशक पं.प्रतापसिंहजी चौहान व इतरांनी विविध भजने सादर केली.

दि.२६ रोजी सकाळी गावातील श्रीकृष्ण महाविद्यालय परिसरातून भव्य अशी शोभायात्रा काढण्यात आली. यात गावातील तरुण व प्रौढ कार्यकर्ते, विद्यार्थी, शिक्षक, महिला, पुरुष इत्यादी मोठ्या संख्येत सहभागी झाले होते. भव्य रथात वरील विद्वान व संन्यासी विराजमान झाले होते. शाळकरी विद्यार्थी व विद्यार्थिनी लेझीम संचलन करीत होते. उत्साही आर्यजनांनी महर्षी दयानंद, हु.श्रद्धानंद, हु.वेदप्रकाश यांच्या बलिदानाप्रीत्यर्थ 'अमर रहे!' अशा घोषणा देत राष्ट्रभक्तिपर गीत गात ही शोभायात्रा सफल केली. सर्वश्री प्रतापसिंह चौहान, शिवाजी निकम, तानाजी शास्त्री, पं.करणसिंहजी, विलास कारभारी आदी जोशपूर्ण आवेशात जयघोष करीत असल्याचे दिसून आले. ही शोभायात्रा मुख्य मार्गाने निघाली. ज्या ठिकाणी वेदप्रकाशजी आर्य या तरुणाचे बलिदान झाले, त्या हुतात्मा चौकात प्रा.राजेंद्रजी जिज्ञासू, प्रकाश आर्य, दयाराम बसयै आदींनी श्रद्धांजली अर्पित करुन आर्यांना जागृत राहण्याचे आवाहन केले. शोभायात्रेचा समारोप आर्यसमाज गुंजोटी च्या नव्या इमारतीजवळ झाला. यावेळी आर्य विद्वानांनी प्रेरक विचार मांडले.

त्यानंतर स्वामी धर्मानंदजी, प्रो.जिज्ञासू, डॉ.धर्मवीरजी, ॲड.प्रकाश आर्य, स्वामी व्रतानंदजी यांच्या शुभहस्ते आर्य समाज गुंजोटीच्या जीर्णोद्धारित भवनाचे उद्घाटन करण्यात आले. सभेचे उपदेशक पं.सुधाकरजी शास्त्री यांनी केलेल्या वेदमंत्रोच्चारणाने नव्या वास्तूत प्रवेश करण्यात आला. तत्पश्चात नूतन इमारतीच्या सभागृहात मुख्य समारंभ पार पडला. कार्यक्रमाचे अध्यक्षस्थान तपस्वी संन्यासी पू.स्वामी श्रद्धानंदजी यांनी भूषविले. प्रारंभी भजनोपदेशक पं.सोगाजी घुन्नर व पं.प्रतापसिंह चौहान यांनी सुमधुर क्रांतिकारी भजने सादर केली.

यावेळी व्यासपीठावर वरील आमंत्रित मान्यवरांसह सभेचे प्रधान डॉ.ब्रह्ममुनिजी, मंत्री माधवराव देशपांडे, राजेंद्रजी दिवे, पं.वेदकुमारजी वेदालंकार, दिनकरराव देशपांडे आदी उपस्थित होते. याप्रसंगी संभाजीनगरच्या आर्य कार्यकर्त्या सौ.सविता जोशी यांनी मराठीत अनुवादित केलेल्या ऋग्वेदाच्या दुसऱ्या भागाचे प्रकाशन स्वामी धर्मानंदजी यांच्या हस्ते करण्यात आले. याच कार्यक्रमात जीर्णोद्धार कार्यासाठी सढळ हाताने व उदार अंत:करणाने सहाय्य करणाऱ्या दानशूरांचा व आर्य कार्यकर्त्यांचा

thearyasamaj.org

मान्यवरांच्या हस्ते सत्कार करण्यात आला.

आपल्या उद्बोधनपर भाषणात सर्व विद्वानांनी वैदिक धर्माच्या प्रचार व प्रसार कार्यासाठी तत्पर राहाण्याचे व हु.वेदप्रकाश यांच्या पावन स्मृतिप्रीत्यर्थ वेदप्रचार कार्य करण्यासाठी जागृत राहण्याचे आवाहन केले. याप्रसंगी श्री दयाराम बसेयै यांनी 'आर्यजनांना आपल्या क्रांतिकारी इतिहासाची आठवण करुन वैदिक धर्म, संस्कृती आणि मानवतेच्या संवर्धनासाठी पुढे येण्याची' विनंती केली. सार्वदेशिक सभेचे मंत्री श्री प्रकाश आर्य यांनी आर्य समाज गुंजोटीच्या नवनिर्मितीला अयोध्येतील राममंदिराची उपमा दिली. ते म्हणाले, 'कित्येक वर्षापासून अयोध्येत श्रीरामांचे मंदिर बांधता आले नाही, पण आर्यांनी मात्र गुंजोटीतील आर्यसमाज मंदिराची उभारणी करुन नवा आदर्श प्रस्थापित केला आहे.' आर्य समाजाचे संगठन वाढविण्यासाठी आर्य कार्यकर्त्यांनी समर्पित भावनेने पुढे यावे आणि समाजातील तळागाळापर्यंत जाऊन प्रचारकार्य करावे. सध्याच्या वाढत चाललेल्या सामाजिक आजारावर आर्य समाज हेच एकमेव औषध आहे, असेही श्री आर्य म्हणाले. स्वामी व्रतानंदजी यांनी महाराष्ट्रातील आर्य कार्यकर्त्यांचा उत्साह पाहुन आपण प्रभावित झालो आहोत, असे सांगून हु.वेदप्रकाश यांच्यानंतर पुढे बलिदानास तयार राहण्याचे आवाहन केले. श्री स्वामी धर्मानंदजी यांनी महाराष्ट्रभूमीला शूरवीरांची व सुधारकर्त्यांची खाण असल्याचे सांगून वेदप्रचारकार्य राबविताना मूर्तिपूजा, जात-पंथ इत्यादींबाबत समझोता न करण्याचे आवाहन केले. गुंजोटी आर्य समाज व गावास केंद्र मानून या परिसरातील आर्य कार्यकर्त्यांनी वैदिक धर्माचा प्रचार करावा, असेही ते म्हणाले. डॉ.धर्मवीरजी यांनी आपल्या सारर्भित विचारांद्वारे श्रोत्यांना प्रभावित केले. ते म्हणाले- ५ हजार वर्षापूर्वी यज्ञ व वेदज्ञान या दोन गोष्टी पौराणिकांनी हिरावून घेतल्या होत्या. त्या परत मिळवून देण्याचे महत्तम कार्य स्वामी दयानंदांनी केले. आता आपणास या दोन संपत्तीचे रक्षण करणे गरजेचे आहे. आजकाल समाजाला मूर्ख बनविण्याचे व फसविण्याचे कार्य मोठ्या प्रमाणात सुरु आहे. तेंव्हा आर्य कार्यकर्त्यांनी हे थांबविले पाहिजे.' प्रो.राजेंद्रजी जिज्ञासू यांनी आपण ५२ वर्षापासून गुंजोटीशी संलग्न असल्याचे सांगून येथील आर्य कार्यकर्त्यांचे मनःपूर्वक स्मरण केले. ते म्हणाले- 'महाराष्ट्रातील वेदप्रकाश, गोदवरीबाई टेके, श्यामलाल इत्यादी आर्य बलिदानी म्हणजे आर्य समाजाचे मूर्तिमंत प्राण आहेत. येथील आर्य सेवकांनी मोठ्या श्रद्धेने समाजाची सेवा

thearyasamaj.org

केली आहे. हा क्रांतिकारी असे यावेळ इतिहास कधीच विसरता येणार नाही. मी या सर्वांप्रति मी कृतज्ञता व्यक्त करतो.'

कार्यक्रमात राज्यातील पुणे, नाशिक, नगर, सोलापूर, नांदेड, लातूर, उस्मानाबाद, जालना, परभणी, बीड इत्यादी जिल्ह्यांसह विशेषतः लातूर जिल्हा व कर्नाटकातील सीमा भागात अनेक कार्यकर्ते उत्साहाने सहभागी झाले होते. कार्यक्रमाचे सूत्रसंचालन पं.प्रियदत्तजी शास्त्री व पं.राजवीरजी शास्त्री यांनी केले. या ऐतिहासिक कार्यक्रमाच्या सफलतेसाठी आर्य समाज गुंजोटीचे प्रधान दिनकरराव देशपांडे, मंत्री काशिनाथराव कदेरे, कोषाध्यक्ष विजय बेळंमकर, म्हाळाप्पा दुधभाते, पदाधिकारी सर्वश्री ओमप्रकाश शिंदे, स्वरूप शिंदे, राजेंद्र गायकवाड, शंकरराव पाटील, विश्वनाथ कदेरे, कार्यकर्ते, गावकरी व तरुण मंडळीनी प्रयत्न केले.

असा हा अजमेरचा प्रेरक ऋषिमेळा

-पं. नारायण कुलकर्णी

यावर्षीचा त्रिदिवसीय ऋषिमेळा दि. ३१ आक्टोबर, १ व २ नोव्हेंबर २०१४ या दिवशी अजमेर (राजस्थान) येथील ऋषि उद्यानात अजमेर येथे हर्षोल्हासाने साजरा करण्यात आला. पहिल्या दिवशी सकाळी यज्ञानंतर १०.३० वा. परोपकारी सभेचे का.प्रधान डॉ. धर्मवीरजींच्या हस्ते **ओ३म् ध्वज** फडकविण्यात आला. भारतभरातून आलेल्या हजारो श्रद्धाळू आर्यजनांनी झेंडागीत गायिले. आर्यवीर दलाने रांगेत, शिस्तीत उभे राहून ध्वज वंदन केले. श्री यतींद्रशास्त्रींनी सूत्रसंचालन केले. या ध्वजारोहनाने तीन दिवसाच्या कार्यक्रमांचे उद्घाटन झाले. दुपारच्या सत्रात **दक्षिण भारतातील बलिदान** हा विषय होता. यात लातूरचे विद्वान प्रा. ओमप्रकाशजी होळीकर यांनी हैद्राबाद मुक्तीसंग्रामातील बलिदानी वीरांच्या कथा सांगितल्या. केवळ आर्य समाजाच्या चळवळीने निजामाला पराभव स्वीकारावा लागला, असे यावेळी ते म्हणाले.

मुख्य वक्ते प्रा. राजेंद्र जिज्ञासुजी यांनी हु. भाई श्यामलाल, हु. गोदावरीबाई टेके, हु. वेदप्रकाश इत्यादी अनेक वीरांच्या शौर्य व बलिदानाच्या कथा ऐकविल्या. अहिंदी भाषिकांपैकी केवळ मराठी भाषिकांतच आर्य समाज इतका का फोफावला ? याचे कारण सांगतांना डॉ. धर्मवीरजी म्हणाले - 'आर्य समाजाने जनसामान्यांचे प्रश्न घेऊन चळवळ केली. त्यामुळे लोकांना हे विचार आवडले व आर्य समाज सर्वांपर्यंत

thearyasamaj.org

पोहोचला.' भजनोपदेशक पं. भूपेंद्र व तबलावादक रामचंद्र यांनी प्रा. राजेंद्र जिज्ञासूंनी पं. नरेद्रजींवर रचलेल्या **पिंजडे वाला शेर दहाडा** या गीताचे सादरीकरण केले. दक्षिण भारतातील सर्वच बलिदानी व कारागृहात यातना सोसलेल्या वीरांचे स्मरण या समारंभात करण्यात आले.

दि. १ नोव्हेंबर रोजी सकाळच्या ऋग्वेद पारायण यज्ञानंतर ब्रह्मा डॉ. वागीशजी म्हणाले की, 'ऋग्वेदात ज्ञान, यजुर्वेदात कर्मकांड, सामवेदात उपासना आहे. ज्ञान, कर्म व उपासनेची पूर्तता अथर्ववेदात आहे, कोणतेही लहानात लहान काम, ईश्वरप्रेमाने युक्त होऊन करणे, म्हणजेच ईश्वराची पूजा आहे.' दुपारच्या सत्रात सध्याच्या आर्य समाजाच्या कार्यपद्धतीबद्दल बोलतांना विद्वान वक्ते म्हणाले की, आर्य समाजाने गुरूकुल चालवून उपदेशक व विद्वान तयार करणे, दूरदर्शन व इतर प्रसार माध्यमांमध्ये विशुद्ध, वेदज्ञान, एक सर्वव्यापक परमेश्वराचा प्रचार प्रसार करणे, संस्कृत भाषेला चालना देण्यासाठी शिबिरे चालविणे, महर्षी दयानंदांच्या विचारांची पुस्तके प्रकाशित करणे, ही कामे करणे नितांत गरजेचे आहे. याच सत्रात २१ ब्रह्मचारी व ब्रह्मचारिणींनी चर्तुवेद कंठस्थीकरण / पाठांतर स्पर्धेत भाग घेतला. त्यात प्रथम पुरस्कार ब्र.मनोज तिवारी व ब्र. विश्वाची आर्या यांना प्रत्येक १८०००/-रू, द्वितीय पुरस्कार ब्र. इंद्रदेव व ब्र. दीपशिखा यांना प्रत्येकी १२०००/ - रू व तृतीय पुरस्कार ब्र. विश्रुति आर्या यांना ८०००/- रू. मिळाले इतर सर्व स्पर्धकांचा सन्मानपत्र देऊन गौरविले.

आतंकवाद व भ्रष्टाचाराची कारणे या विषयावर विचार व्यक्त करताना डॉ. वागीश म्हणाले- 'ईश्वर, कायदे व समाजाचे भय समाप्त झाल्याने मनुष्य पाप करायला भीत नाही. समाजाची निष्क्रियता व योग्य दंड व्यवस्था नसल्याने आज सर्वत्र अराजकता दिसत आहे. या सत्राचे विशेष अतिथी राजपूत राजे ठाकूर विक्रमसिंह यांनी राजपूत राजांनी केलेल्या शौर्य कथा विशद केल्या व आर्य समाजास तन, मन, धनाने सहकार्य करण्याची घोषणा केली.

आर्य समाजाच्या चळवळीबद्दल बोलतांना लातूरच्या प्रा.सौ.डॉ.वसुंधरा गुडे म्हणाल्या- 'मी आर्य समाजी घरात लग्नानंतर आल्याने सुखी झाले. आमची प्रगती झाली, महिलांतील अज्ञान, अंधश्रद्धा दूर करून त्यांचा सर्वांगिण विकास करण्यासाठी **आर्य समाज** सर्वात चांगली संस्था आहे. या कार्यक्रमास श्रोतृवर्गातून विशेषतः महिलांतून उत्स्फूर्त प्रतिसाद मिळाला.

शेवटच्या दिवशी वेदमंत्रांच्या उद्घोषात त्रिदिवसीय ऋग्वेद पारायण यज्ञाची पूर्णाहुती झाली. या यज्ञाची व्याख्या करताना डॉ. वागीशजी म्हणाले- यज्ञात जलाचा उपयोग होतो. जलाचे मुख्य गुण निर्मलता, शीतलता व शांती आहे. जे

thearyasamaj.org

काम निर्मळ मनाने, शांततेने व निष्काम भावनेने केले जाते, ते यज्ञमय होते. दैनिक यज्ञ करणे हे प्रत्येकाचे कर्तव्य आहे. हे उपकार नव्हे. वेदप्रवचनात डॉ. धर्मवीर यांनी **ईश्वर** हा मनुष्याच्या रूपात अवतार घेत नसून जीवाचा पुनर्जन्म होतो, असे सप्रमाण सांगितले. तसेच युवा संमेलनात युवकांनी संघटित होऊन कार्य करण्याचे आवाहन करण्यात आले.

या ऋषीमेळ्यात सर्वश्री प्रो. राजेंद्र जिज्ञासू (पंजाब), आचार्या सूर्यादेवी (काशी), आचार्य शीतल (अलीयाबाद), आचार्य उदयन (तेलंगाना), आचार्या सुकामा यांसह इतर अनेक विद्वानांचा सहभाग होता । आर्चाय सोमदेवर्जीनी सूत्रसंचालन केले. स्वामी विश्वङजीनी सकाळी ५ ते ६.३० सूक्ष्म व्यापक व्यायाम, आसन, प्राणायाम, ध्यान यासंबंधी योग शिबिर घेतले.

या कार्यक्रमासाठी सुमारे चार हजार लोक वेगवेगळ्या प्रांतातून आले होते. अमेरिकेतून २ विद्वान खास या कार्यक्रमासाठी आले होते. यावर्षी अपेक्षेपेक्षा जास्त प्रतिसाद मिळाला. भोजन व निवासाची मोफत व्यवस्था होती. आकाश ढगाळलेले असल्याने वातावरणात थंडी नव्हती.

आर्य समाजी लोकांचे कंठमणी, प्रिय भजनोपदेशक व ऋषि गाथाकार पं. सत्यपालजी पथिक हे या ऋषिमेळ्यात वावरतांना दिसत होते. त्यांच्या हृदयाची शस्त्रक्रिया झाल्याने त्यांना गाता येत नव्हते. प्रत्येक पुरूष व स्त्री त्यांना पाहिल्यावर कृतज्ञेने मान झुकवत होते. त्यांनी पंच्याहत्तरी ओलांडली आहे. ते लवकर बरे व्हावेत, यासाठी प्रत्येक जण मनोमन ईश्वराची प्रार्थना करीत आहे.

डॉ. धर्मवीर व त्यांची टीम व्यवस्थेत कुठेच कमी नव्हती. या लोकांनी मागील २० वर्षात ऋषी उद्यानाचा काया - पालट केला. पं. लेखराम यांची इच्छा वाया गेली नाही व लेखनाचे काम अविरत चालू आहे. अशा प्रकारे पुढच्या वर्षी पुन्हा येण्याच्या आशेवर जड अंतःकरणाने सर्वांनी निरोप घेतला.

-आर्य समाज, नांदेड/ ८८८८३३१०४

शोक वार्ता

श्रीमती चिंचाळकर यांचे देहावसान

किल्लेधारूर येथील आर्य समाजाच्या सक्रिय कार्यकर्त्या श्रीमती जयश्री अनिल चिंचाळकर यांचे दि. २६ नोव्हेंबर २०१४ रोजी दुःखद निधन झाले. त्या ३८ वर्षे वयाच्या होत्या. त्यांच्या मागे एक मुलगा, सासु-सासरे, दीर असा परिवार आहे. श्रीमती चिंचाळकर या आर्य समाजाच्या विविध कार्यक्रमात भाग घेत असत. परळी येथील सोनपेठकर हे त्यांचे माहेरघर होते.

गेल्या कांही महिन्यापासून त्या आजारी होत्या. त्यांच्यावर चिकित्सकांकडून

thearyasamaj.org

योग्य ते उपचार करण्यात आले. दुर्दैवाने अल्पावधीतच त्यांनी जीवनयात्रा संपविली. दिवंगत श्रीमती चिंचाळकरांच्या पार्थिवावर पं. सुधाकरजी शास्त्री यांच्या पौरोहित्याखाली वैदिक पद्धतीने अंत्यसंस्कार करण्यात आले. अंत्ययात्रेत आर्य समाजाचे पदाधिकारी कार्यकर्ते, प्रतिष्ठित नागरिक आदी बहुसंख्येने सहभागी झाले. या आकस्मिक निधनाने सर्वत्र हळहळ व्यक्त केली जात आहे.

चि. वेदकुमार शिंदे यांचा दुर्दैवी अंत

आर्य समाज रामनगर, लातूरचे ज्येष्ठ सदस्य व आंतरजातीय विवाह मंडळाचे प्रमुख श्री माणिकराव भोसले यांचे नातू (मुलीचे सुपुत्र) चि. वेदकुमार रघुनाथ शिंदे यांचे गेल्या ४ नोव्हेंबर २०१४ रोजी कार अपघातात दुर्दैवी निधन झाले. त्यांचे वय अवघे २७ वर्षे होते.

आपल्या आई-वडील व कुटुंबासाठी एकुलते एक असलेल्या वेदकुमार यांच्या आकस्मिक मृत्युमुळे सर्वत्र हळहळ व्यक्त होत आहे. आपल्या मित्राच्या विवाहासाठी मित्रजनांसमवेत तवेरा कारवाहनाने पुणे मार्गे अमरावतीकडे जात असतांना बडनेरा अकोला रस्त्यावरील संधू धाब्याजवळ स. ८.३० वा हा अपघात घडला. त्यांच्या वाहनास समोरून भरधाव येणाऱ्या ट्रकने जोरदार धडक दिली व या दुर्घटनेत चि. वेदकुमारचा करूण अंत झाला. त्यांच्या पार्थिवावर दुसऱ्या दिवशी रात्री ९.३० वा बोटकूळ ता. निलंगा या पैतृक गावी अत्यंत शोकाकुल वातावरणात अंत्यसंस्कार करण्यात आले.

चि. वेदकुमार हा एक कष्टाळू, मनमिळावू, अभ्यासू व सेवाभावी गुणी मुलगा या रूपाने ओळखला जाई. लातूर व नगर येथे त्याने अतिशय श्रमपूर्वक आपले उच्च शिक्षण पूर्ण केले. नगर येथील खाजगी कंपनीत नोकरी करून तो अलिकडील काळात पुणे येथे गेला होता. आजोळच्या आर्य विचारांचा वेदकुमारवर चांगलाच प्रभाव होता. आर्य समाज रामनगर चे सदस्य बनून तो या संस्थेच्या कार्यात सहकार्य करीत असे. याच आर्य समाजासमोर आई-वडिलांनी चि. वेदकुमारच्या नावाने चालविलेले टोप्यांचे दुकान शहरात प्रसिद्ध आहे. अशा तरूण आर्य युवकाच्या आकस्मिक निधनाने आर्य समाज एक भावी आर्य कार्यकर्त्याला मुकला आहे.

परमेश्वर दिवंगत आत्म्यांना शांती व सद्गती प्रदान करो, ही प्रार्थना !

प्रांतीय सभा व आर्यजन शिंदे व चिंचाळकर कुटुंबियांच्या दुःखात सहभागी आहेत.

सूचना – आगामी जानेवारी २०१५ पासून वैदिक गर्जनेचे ग्राहकशुल्क पुढील प्रमाणे निश्चित झाले आहेत. तरी ग्राहक बनू इच्छिणाऱ्यांनी याची नोंद घ्यावी

अ) आजीवन – रू.१०००/- **ब) वार्षिक – रू. १०० /-**

thearyasamaj.org

हु. वेदप्रकाश बलिदान दिवसपर गुंजोटी में जुलूस

गुंजोटी में निकाले गये जुलूस में रथपर विराजमान सर्वश्री डॉ.धर्मवीरजी, प्रो.राजेन्द्रजी जिज्ञासु, स्वामी श्रद्धानंदजी, स्वामी धर्मानंदजी, स्वामी व्रतानन्दजी ।

जुलूस में उत्साही छात्रों द्वारा प्रस्तुत लैझीम झाँकी ने दर्शकों के मन को आकर्षित किया ।

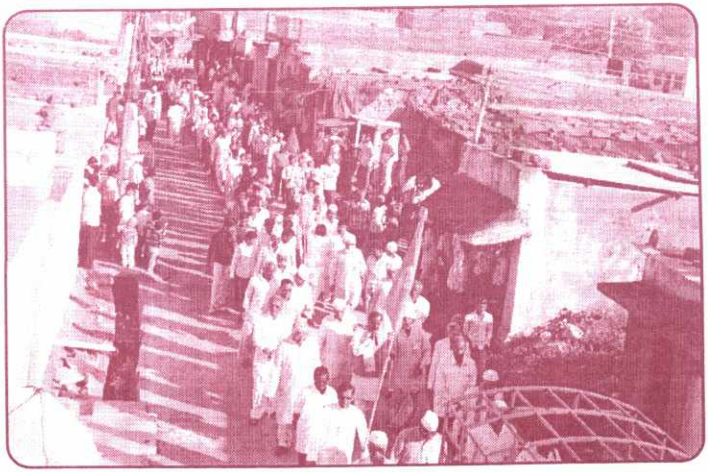

जुलूस में सम्मिलित आर्यजन तथा बच्चे-बच्चियाँ

thearyasamaj.org

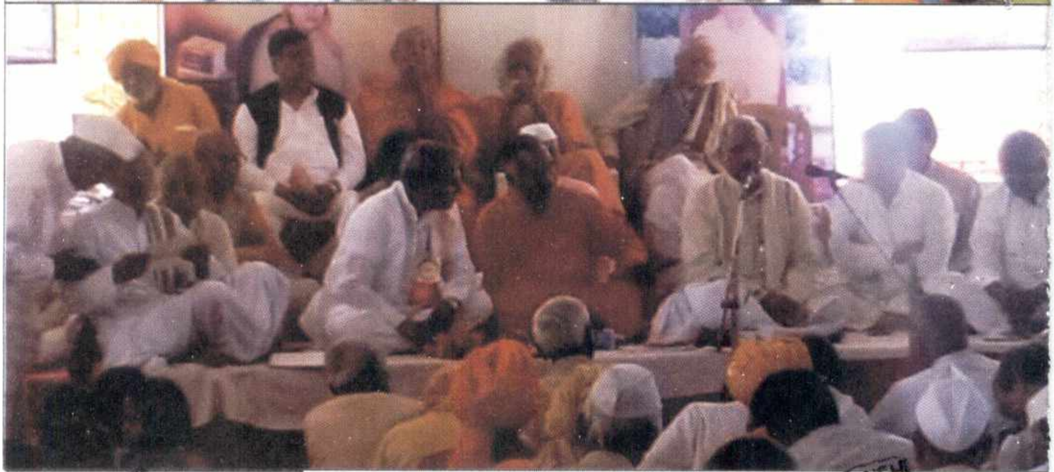

Reg.No.RNI No. MAHBIL/2007/7493 Postal No. L-2/18/RNP/16/Beed/2012-14

सेवा में,
श्री

Printed Matter Book Post

प्रेषक -
मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,
आर्य समाज, परली वैजनाथ.
पिन ४३१ ५१५ जि.बीड. (महाराष्ट्र)

यह मासिक पत्र सम्पादक व प्रकाशक श्री मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा वैदिक प्रिंटर्स, परली वैजनाथ इस स्थलपर मुद्रित कर 'महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा' कार्यालय 'आर्य समाज, परली वैजनाथ ४३१ ५१५ जि.बीड (महाराष्ट्र)' इस स्थान से प्रकाशित किया।

प्रान्तीय सभा व आर्य समाज परली के
सहयोगी व शुभचिंतक

पुरुषार्थी उद्योजक श्री बद्रीनारायणजी बाहेती

शुभकार्य आपकी ओर...पत्रिकाएं हमारी ओर..!

बाहेती ऑफसेट प्रिंटर्स

भवानी नगर, परली-वै. जि.बीड फोन-०२४४६-२२२६७८ मो. ९४२२२४२६७८

भिन्न-भिन्न रंगों के साथ सैंकडों डिझाइनोमें विवाह तथा
मंगलमय कार्यक्रमों की पत्रिकाओं के प्रकाशन

विविध प्रकार की
कार्यालयीन छपाई-
रजिस्टर्स, बीलबुक्स,
रसीदबुक्स, लेटरपैड,
व्हिजीटींग कार्ड,
डिजीटल पत्रिकाएं,